



॥ श्री दीनारामाय नमः ॥

त्रिकाल-देवदन्त विधि

नामाधिक पाप विधि मुद्रिका



रत्नचन्द्र क्रिया

वृ-दी-गो-वि-श्री-श्री-का-प्र-वा,

श्री-दी-श्री-श्री-श्री-उप-पुर ।



श्री जिनवाणी प्रयाग ग्रन्थमाला,

उपपुर ।

मुद्रिका

पुस्तक संख्या / प्रथम भाग (वि-दी-गो-वि-श्री-श्री-का-प्र-वा) ३  
द्वितीय भाग (श्री-दी-श्री-श्री-श्री-उप-पुर) ४

## दो शब्द

ग्रन्थमाला की तरफ से “त्रिकाल देव वन्दन विधि सामायिक पौषध विधि सहित” नामक पुस्तक भाई श्री रतनचन्दजी कोचर द्वारा संग्रह की हुई प्रकाशित कर रहे हैं। इस पुस्तक में सामायिक पौषध देववन्दन इत्यादि करने की क्रिया पूर्णरूप से लिखी गई है जिससे प्रत्येक सज्जन जिसको क्रिया विधि का सही ज्ञान नहीं हो सही तरीके से पार सकेगा। इस की आवश्यकता को हम कई दिन से अनुभव कर रहे थे, परन्तु कागज की कमी और सरकार द्वारा कागज पर नियंत्रण होने से पुस्तक का प्रकाशन नहीं हो सका। हमारा विचार इस पुस्तक की अधिक से अधिक कापिया छापने का था परन्तु अधिक सहयोग न मिलने से फिलहाल थोड़ी ही पुस्तकें छाप रहे हैं। परन्तु अगर इसकी उपयोगिता सिद्ध हुई तो दूसरा संस्करण जल्दी ही प्रकाशित कर देंगे।

इस पुस्तक को संग्रह करने का श्रेय श्री भाई रतनचन्दजी कोचर को है। और इन्हीं के प्रसंग से ही श्रीमान् वाडीलाल जीवराज शाह पालनपुर निवासी ने अपना अमूल्य समय देकर पुस्तक की शुद्धि अशुद्धि ठीक की है तथा प्रस्तावना भी लिखी है जिसके लिये दोनों सज्जन हार्दिक धन्यवाद के पात्र हैं। साथ ही भाई ईश्वरलालजी जैन ने अपने “आनन्द प्रेस” में इसको छापने और उसके प्रूफ संशोधन इत्यादि में जो सहायता दी है उसके लिये हम उनकी सराहना करते हैं। हमें आशा है कि इस पुस्तक से सज्जनवृन्द लाभ उठाकर हमारे परिश्रम को सफल करेंगे।

इस पुस्तक में शुद्धियों का पूर्ण ध्यान रखते हुए भी दृष्टि दोष से या प्रमादवश कोई भूल चूक रह गई हो उनको सुधार कर पढ़ने की कृपा करें। इति शुभम्। विनीत—

प्रबन्धक—श्री जिनवाणी प्रचार ग्रन्थमाला, जयपुर।

## \* प्रस्तावना \*

सर्गारिष्टप्रणाशाय, सर्गभीष्टार्थदायिने ।

मर्लविधनिवानाय, श्री गौतमस्वामिने नमः ॥

इस “त्रिकाल देवन्दन विधि—सामायिक पाँपघ विधि सहित” नाम की पुस्तिका “श्री जिनराणी प्रचार ग्रन्थमाला” जयपुर की तरफ से प्रकाशित की जा रही है यह बड़े हर्ष की बात है । जो व्यक्ति विधि विधान के लिये रुचि तो रखता है लेकिन अनपठित होने के कारण या स्रगों के विस्मृत होने के कारण क्रिया नहीं कर सकता उनके लिये यह पुस्तक अत्यन्त लाभदायक सिद्ध होगी, इसमें संदेह नहीं ।

गुजरात सौराष्ट्र में ऐसी पुस्तकें गुजराती भाषा में दली जाती हैं । वन्तु वे गुजराती भाषा भाषियों के लिये ही उपयोगी हैं लेकिन हिन्दी भाषा भाषियों के लिये ऐसी पुस्तिका की अत्यन्त आवश्यकता थी ये कमी अब इस “ग्रन्थमाला” की तरफ से प्रकाशित की हुई इस पुस्तिका से पूर्ण हो जायगी ।

आगे से तो इस जडवाट के जमाने में धर्म क्रिया के प्रति जो अभिरुचि होनी चाहिये वो कम होती जा रही है । जो क्रिया कर रहे हैं वे क्रिया का मर्म विज्ञेप कम समझते हैं । परिणाम यह होता है कि क्रिया रम-वृत्ति ज्यादा देखने में नहीं आती । आज तो एकान्त ज्ञान को

मानने वाले वा एकान्त क्रियाकांडी बहुत मिलते हैं लेकिन वास्तव में ज्ञान के साथ २ क्रिया होने से ही उद्धार है । महान पूर्वधर श्री मद् उमास्वातिवाचक “तत्त्वार्थ सूत्र” में फरमाते हैं कि—

सम्यक्दर्शन-ज्ञान-चारित्राणि मोक्षमार्गः—

ज्ञान क्रियाभ्यां मोक्षः—जैसे समुद्र में तरने का ज्ञान तो है किन्तु हाथ पांव नहीं हिलाने से वह कभी पार उतर सकता है ? तात्पर्य कहने का यह है कि ज्ञान और क्रिया दोनों ही साथ में होने से ही आत्मोन्नति का जीव साधक बन सकता है ।

मेरा खयाल है कि इस छोटीसी पुस्तिका के लिये ऐसी प्रस्तावना क्यों ? - लेकिन जो लोग ज्ञान के प्रति एकान्त ध्यान रखते हैं उनके लिये प्रथम क्रिया रुचि होने की आवश्यकता है और क्रिया रुचि होने के बाद जो विधि विधान से अनभिज्ञ हैं उनके लिये ऐसी पुस्तिका सहायतारूप होगी । ये किंचित बतलाने के लिये ज्यादा विवेचन किया गया है ।

मुझे यह प्रस्तावना लिखने का जो अवसर दिया गया है उसके लिये “श्री जिनवाणी प्रचार ग्रन्थमाला” और मेरे दीर्घकालीन मित्र भाई रतनचन्दजी कोचर का आभारी हूँ ।

वि० सं० २००७ आसाढ़ दूजा

शुक्ल पंचमी गुडवार

ता० २० जुलाई सन १९५०

भवदीय—

वाडीलाल जीवराज शाह,  
पालनपुर ( गुजरात )

## ❀ अनुक्रमणिका ❀

	पृष्ठ
विषय	१
नामायिक लेने की विधि	५
नामायिक पारने की विधि	६
पौष्य विधि	२१
पाऊण पोरिमी की विधि	२३
गुरु उदन	३१
द्वेय दर्शन विधि	४१
पञ्चस्त्राण पारने की विधि	४७
पौष्य मे ण्णामण करने की विधि	४८
पौष्य म पणाय (माया या म्थटिल)-जाने की विधि	४८
मिर्फ रात्रि के चार पहर का पौष्य लेने की विधि	४९
मुअह चार पहर का पौष्य लिया हो और-	
पीछे आठ पहर का पौष्य लेने की विधि	४९
पिछले पहर को पडिलेइण करने की विधि	५०
मधारा पोरिसी पडाने की विधि	५७
आठ पहर के तथा रात्रि के पौष्य पारने की विधि	६५
दिन के चार पहर का पौष्य पारने की विधि	६९
देवयन्दन विधि	७०
मअह त्रिगाग मज्जाप	८९

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३५	११	समभल	समभाल
३५	१२	अतिरसाल	अतिहिरसाल
३५	१४	अभितर	अभ्यंतर
३५	१५	धणीयुं	धडीयुं
३५	१७	समी	सवि
३५	१८	पोख	पोप
३६	२०	सिद्धाए	सद्राए
३८	१८	धम्मतित्थियरे	धम्मतित्थियरे
४१	१६	धम्मतित्थियरे	धम्मतित्थियरे
६३	२	अंतरंत	अतरंत
६४	५	मम	मह
६७	४	पारेमि	पारुं
६७	७	पारिअं	पायुं
६८	७	पारेमि	पारुं
६८	१०	पारिअं	पायुं
७३	६	कवल	कवड
८७	१४	पंचम	पंचमी
९०	१	विरोधी	विराधी
९१	१	नीमा	नियमा
९२	८	जन	जिन

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
६३	५	जाजाजीम	जायजी
६३	१२	आठम	आठम ने
६८	६	उलट	उलट
६८	२१	कभर	करभ
१००	७	नचे	नाचे
१०३	१३	अमृतदश	अप्लदश
१०४	१०	भल्ली	मल्ली
१०५	४	सथारे	संथारे
१०५	६	परिहरी	परिहारी
१०५	८	परिहरीण	त्रिसरीण
१०५	१३	दमामा	ददामा
१०६	५	विकसत	त्रिकमत
१०७	११	सानिध्य	मानिध्य
१०७	१६	गल	मंगल
१०७	२१	सुस्म	स्वरूप

शुद्धिपत्रम् के अलागा निम्न लिखी बातों को ध्यान में रखें—

१—आचार्य प्रमुख की स्थापना होने से नवकार पचिदिय की स्थापना करने की जरूरत नहीं ।

२—पौषध लेने की क्रिया गूढे होकर करनी चाहिये ।

३—पडिलेहण में मुँहपत्ति के ५० बोल, चरबला का १०, आसन का २५ कदोरे का १०, घोती का २५ और जेप बखों का २५,



३ मायाशून्य, नियागाशून्य, मिथ्यात्वशून्य परिहर्तुं ।  
डावे कंधे पर प्रतिलेखना करते:—

२ क्रोध, मान परिहर्तुं ।

और जीमणे कंधे पर:—

२ माया, लोभ परिहर्तुं ।

फिर मुँहपति नाभि नीचे नहीं लेजानी जिमने चरवले से  
प्रति लेखना करनी उसमें डावे घुटने पर:—

३ पृथ्वीकाय, अपकाय, तेउकाय, की जयणा कर्तुं ।  
और जीमणे घुटने पर:—

३ वाउकाय, वनस्पतिकाय, त्रसकाय की रक्षा कर्तुं ।

साधू व श्रावक ५० बोल गिने और साध्वी व श्राविका ३  
लेश्या, ३ शल्य और ४ कषाय छोड़कर बाकी ४० बोल गिने ।





❀ श्री वीतरागाय नम ❀

# त्रिकाल-देववन्दन विधि

(सामायिक फौफुध विधि सहित)

(अथ सामायिक लेने की विधि)

श्रावक श्राविका सामायिक लेने में पहिले शुद्ध वस्त्र पहन कर चौकी (बाजोठ) आदि उच्च स्थान पर पुस्तक जपमाला (नवकारवाली) आदि रखकर, जमीन पूजकर, आसन त्रिधाकर, चरवला और मुहपत्ति लेकर बैठे। बैठ के तौंये हाथ में मुहपत्ति मुएने आगे रखकर दाहिने हाथ को स्थापन किये हुए पुस्तक आदि की स्थापना के समुए करके नवकारमत्र पढ़ें।

नमो अरिहंताण । नमो सिद्धाण । नमो आयग्याण ।  
नमो उपज्झायाण । नमो लोए सच्चसाट्टणं । एतो पच  
नमुट्ठारो । सज्यपावप्परासणो । मंगलाण च सच्चेसि । पढम  
हवइ मंगलं ॥१॥

(ऐसे एक नवकार गिनकर)

पंचिदियसंवरणो, तद् नवविह्वंभचेरगुत्तिधरो । चउ-  
विहकमायमुक्को, इअ अट्टारस गुणेहिं मंजुत्तो ॥१॥ पंच मह-  
व्ययजुत्तो पंचविहायारपालणसमत्थो । पंचममिओ तिगुत्तो.  
छत्तीसगुणो गुरु मज्झ ॥२॥

(ऐसे पंचिदिय कहे, यदि प्रथमसे उस स्थान पर आचार्य  
प्रमुख की स्थापना की हुई हो तो वहां पंचिदिय नहीं कहना । पीछे)

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिजाए निसीहि-  
आए मत्थएण वंदामि ।

इच्छाकारेण संदिमह भगवन् ! इरियावहियं पडिक्क-  
मामि ! इच्छं इच्छामि पडिक्कमिऊं, इरियावहियाए, विरा-  
हणाए गमणागमणे पाणक्कमणे वीयक्कमणे हरियक्कमणे  
ओसा उत्तिंग पणग दग मट्टी मक्कडासंताणा संक्रमणे, जे  
मे जीवा विराहिया, एगिंदिया, वेइंदिया, तेइंदिया, चउरिं-  
दिया, पंचिंदिया, अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया,  
संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्विया, ठाणाओ ठाणं  
संक्रामिया, जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

तस्स उत्तरीकरणं, पायच्छित्तकरणं, विसोहीकर-  
णं, विसल्लीकरणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्टाए, ठामि  
काउस्सगं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं,  
जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए पित्तमुच्छाए,

सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलमंचालेहिं, सुहुमेहिं  
दिडिसंचालेहिं, एममाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अपिराहियो  
हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाण अरिहताणं भगवंताणं, नमुक्का-  
रेणं न पारेमि ताण काय टाणेण मोणेण भाणेणं अप्पाणं  
गेसिरामि ।

(यहा एक लोगस्स का या चार नक्कार का काउस्सग्ग करना  
पीछे प्रगट लोगस्स कहना, वह नीचे लिखे अनुसार)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहते  
फित्तइस्स, चउत्तीस पि केउली ॥१॥ उमभमजिअ च वदे,  
संभवमभिणदणं च सुमडं च । पउमप्पहं सुपास, जिण च  
चंदप्पहं वदे ॥२॥ सुनिहिं च पुप्फदतं, मीअल-सिज्जेस  
वासुपज्जं च । विमलमणं च जिण, धम्मं सतिं च  
वढामि ॥३॥ कुधुं अर च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वय नमि-  
जिण च ॥ वढामि रिड्डनेमिं, पास तह वद्धमाण च ॥४॥  
एण मए अभियुआ, पिहुयरयमला पहीणजरमरणा । चउ-  
त्तीस पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयतु ॥५॥ फित्थिय-  
वदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गो-  
हिलाभ, समाहिणरमुत्तम दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा,  
आइच्चेसु अहिय पयासयरा । सागरजरगंभीरा, सिद्धा सिद्धि  
मम दिमंतु ॥७॥

(पीछे समासमण देना)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-  
आए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् !  
सामायिक मुहपत्ति पडिलेहुं ? “इच्छं”

(ऐसे कहकर मुहपत्ति पडिलेहना । पीछे)

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-  
आए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् !  
सामायिक संदिसाहुं ? “इच्छं” । इच्छामि खमासमणो  
वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥  
इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक ठाउं ? “इच्छं”  
(ऐसे कहकर दोनों हाथ जोडकर एक नवकार नीचे मुजव गिनना)

नमो अरिहंताणं । नमो सिद्धाणं । नमो आयरि-  
याणं । नमो उवज्झायाणं । नमो लोए सव्वसाहूणं ।  
एसो पंच नमुक्कारो । सव्व पावप्पणासणो । मंगलाणं च  
सव्वेसिं । पढमं हवइ मंगलं ॥

[पीछे ‘इच्छकारी भगवन् पसाय करी सामायिक दंडक उच्चरावोजी  
ऐसे बोलकर ‘करेमि भंते’ स्वयं उच्चरे यदि गुरु या वडील हो तो  
वे उच्चरावै]

करेमि भंते ! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि । जाव  
नियमं पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए  
काएणं न करेमि न कारवेमि तस्स भंते ! पडिक्कामामि  
निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

इच्छामि समासमणो वंदितुं जावणिज्जाए निसीहि-  
 आए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण सदिसह भगवन्  
 बेसणे सदिसाहु ? “इच्छं” इच्छामि समासमणो वंदितुं  
 जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण  
 सदिसह भगवन् बेसणे ठाउं ? “इच्छं” इच्छामि समास-  
 मणो वंदितुं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥  
 इच्छाकारेण सदिसह भगवन् सज्जाय संदिसाहु ? “इच्छं”  
 इच्छामि समासमणो वंदितुं जावणिज्जाए निसीहिआए  
 मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्जाय  
 करु ? “इच्छं”

[ऐसे कहकर दोनों हाथ जोड़कर तीन नवकार गुणना]

॥ इति सामायिक लेनेकी विधि सपूर्ण ॥

सामायिक लेने के बाद स्वाध्याय तथा नवकारवाली स्तवन  
 आदि में समय व्यतीत करे, अथवा प्रतिक्रमण करे । ४८ मिनट  
 पूर्ण होने के बाद सामायिक पारे ।

— ❀ —

★ अथ सामायिक पारने की विधि ★

इच्छामि समासमणो वंदितुं जावणिज्जाए निसीहि-  
 आए मत्थएण वंदामि ॥



कित्तइस्म, चउरीम पि केवली ॥१॥ उयममजिअ च वदे,  
 सभयमभिणदण च सुमडं च । पउमप्पह सुपास, जिण च  
 चंदप्पह उद ॥ २ ॥ सुविहि च पुप्फदंतं, मीअलसिज्जंस-  
 वामुपुज्ज च । पिमलमण १ च जिण धम्म सतिं च  
 वदामि ॥३॥ कुंडुं अरं च मल्लि, उदे मुणिसुव्वय नमिजिण  
 च । उदामि रिद्धनेमिं, पास तह वद्धमाण च ॥ ४ ॥  
 एव मए अभिउआ, निहुयरयमला पडीणजरमरणा ।  
 चउरीमं पि निणउरा, तित्थयरा मे पमीयतु ॥ ५ ॥  
 कित्तिय वदिय मशिया, जे ए लोगस्म उत्तमा मिट्ठा ।  
 आरुग्गरोहिलाभ, ममाहिउरमुत्तम दिंतु ॥ ६ ॥ चंदेमु  
 निम्मलयरा, आइच्चेसु अहिअपनासयरा । म.गरउग्गभीरा,  
 सिद्धा सिद्धिं मम टिमतु ॥ ७ ॥

इच्छामि समासमणो उदिउ जाणणिज्जाए निमीहिआए  
 मत्थएण वदामि ॥ इच्छाकारेण सदिसड भगवन् मुहपत्ति  
 पडिलेहुं ?

( ऐसे कहकर मुहपत्ति पडिलेहना—पीछे समासमण नेना— )

इच्छामि समासमणो उदिउं जाणणिज्जाए निमीहिआए  
 मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण सदिसड भगवन् मामापियं  
 पारेमि ? 'यथाशक्ति'

इच्छामि समासमणो उदिउ जाणणिज्जाए निमीहिआए



मत्प्रएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिग्ध भगवन् ! मामायिग्रं  
पारिग्रं ' तहति '

( ऐसे कहकर दाहिने हाथको चरवले या आसन पर रखकर  
मस्तक झुकाकर एक नवकार मंत्र पढ़कर 'सामायिश्रवयजुतो'  
सूत्र पढे )—

नमो अरिहंताणं । नमो सिद्धाणं । नमो आयरियाणं ।  
नमो उवज्झायाणं । नमो लोए सव्व साहूणं । एसो पंच  
नमुक्कारो । सव्व पावप्पणासणो । मंगलाणं च सव्वेविं ।  
पढमं हवइ मंगलं ॥

सामायिश्रवयजुतो, जाव मण्णे होई नियमसंजुत्तो ।  
छिन्नइ असुइं कम्मं, सामाइअ जत्तिआ वारा ॥१॥ सामाइ-  
अंमि उ कए, सनणो इव सावओ हवइ जम्हा । एएण  
कारणेणं बहुसो सामाइयं कुज्जा ॥२॥

मैंने सामयिक विधिसे लिया, विधिसे पूर्ण किया,  
विधिमें जो कोई अविधि हुई हो तो मिच्छामि दुक्कडं ।

दस मनके, दस वचनके, वारह काया के ये कुल वतीस  
दोषोंमें से कोई दोष लगा हो तो मिच्छामि दुक्कडं ।

॥ इति सामायिक पारनेकी विधि संमाप्ता ॥

## ( पौष्य विधि )

जो श्राविक श्राविका पौष्य करना चाहे उनको सुनह रई प्रतिक्रमण करना चाहिये, पौष्य करने में इस प्रकार वस्त्रादि उपकरण होने चाहिये—मुहपति, चरवला, ऊनी आमन, शुद्ध धोती, उतरासन, मात्रा के लिये जाते समय पहनने की धोती, नाक साफ करने का रूमाल या गेडिया, सिर व वदन पर ओढ़ने के लिये कम्बल, सथारिया—सोने के लिये, डडासण, गरम पानी, लम्बा चूना पाना में डालने के लिए, मोते वक्त दोना कानों के छेपे में जीव जलु की यानना के लिए कुडल यानी रूई के दो फोरे ।

श्रावक श्राविका पौष्य लेने से पहिले शुद्ध वस्त्र पहन कर चौरी (मानोठ) आदि उच्च स्थान पर पुस्तक जपमाला (नवकार-घाली) आदि रखकर, जमीन पूजकर, आसन पिछाकर, चरवला और मुहपति लेकर बैठे । बैठ के तौथे हाथ में मुहपति मुग्ने आगे रखकर दाहिने हाथ को स्थापन किये हुए पुस्तक आदि की स्थापना के समुग्र करके नवकारमत्र पढ़े ।

नमो अग्निहाणं । नमो सिद्धाण । नमो आयरियाण ।  
 नमो उज्ज्मायाण । नमो लोण मन्वमाहण । ण्यो पच  
 नमुषागे । मन्वपापप्पणामणो । भगलाण च मन्वेमि । पटम  
 हण्ड मगल ॥१॥

(०में ण्य नवकार गिनकर)

पंचिदियमंत्रणो, तह नवविद्वंभचेरगुत्तिधरो । चउ-  
विहकमायमुक्को, इअ अड्डारम गुणेहिं मंजुनो ॥१॥ पंच मह-  
व्वयजुत्तो पंचविहायारपालणसमत्थो । पंचसमिअो तिगुनो,  
छत्तीसगुणो गुरु मज्झ ॥२॥

(एसे पंचिदिय कहे, यदि प्रथमत्वे उस स्थान पर आचार्य  
प्रमुख की स्थापना की हुई हो तो वहां पंचिदिय नहीं कहना । पीछे)

इच्छामि खमाभमणो ! वंदितं जावणिज्जाए निसीहि-  
आए मत्थएण वंदामि ।

इच्छाकारेण संदिमह भगवन् ! इरियावहियं पडिक-  
मामि ! इच्छं इच्छामि पडिकमिऊं, इरियावहियाए, विग-  
हणाए गमणागमणे पाणकमणे वीयकमणे हरियकमणे  
ओसा उत्तिंग पणग दग मट्टी मक्कडामंताणा संकमणे, जे  
मे जीवा विराहिया, एगिंदिया, वेइदिया, तेइंदिया, चउरिं-  
दिया, पंचिदिया, अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया,  
संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्विया, ठाणाओ ठाणं  
संक्रामिया, जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसोहीकर-  
णेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्ममाणं निग्घायणट्ठाए, ठामि  
काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं,  
जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, ममलिए पित्तमुच्छाए,

सुहुमेहिं अगसचालेहिं, सुहुमेहिं खेलमंचालेहि, सुहुमेहि  
 दिडिमचालेहिं, एउमाडएहिं आगारेहिं अभग्गो अपिगाहिओ  
 हुज्ज मे काउम्मग्गो । जाय अरिहताण भगवताण, नमुका-  
 रंण न पारेमि ताव काय टाणेण मोणेण भाणेण अप्पाण  
 वोसिरामि ।

(यहा एक लोगस्स ऋ या चार नवकार का काउस्सग्ग करना  
 पीछे प्रगट लोगस्स कहना, वह नीचे लिखे अनुसार)

लोगस्म उज्जोयगरे, धम्मतिथ्यरे जिणे । अरिहते  
 कित्तडस्स, चउवीस पि केवली ॥१॥ उमभमजिय च उंढे,  
 सभयमभिणदण च सुमड च । पउमप्पह सुपासं, जिणं च  
 चदप्पहं उढ ॥२॥ सुनिहिं च पुप्फटत, सीअल-मिज्जस  
 वामुपुज्ज च । निमलमणत च जिण, धम्म सतिं च  
 वढामि ॥३॥ कुबुं अरं च मल्लिं, उढे मुणिसुव्वय नमि-  
 जिण च ॥ उढामि गिड्डनेमिं, पाम तह बट्टमाण च ॥४॥  
 एउं मए अभिउया, निहययमला पहीणजरमरणा । चउ-  
 वीस पि जिणवरा, तिथ्यवरा मे पमीयतु ॥५॥ कित्तिय-  
 उदिय-महिया, जे ए लोगस्म उत्तमा मिद्धा । आग्गो-  
 हिलाम, समाहिपरमुत्तम दितु ॥६॥ चडेसु निम्मलयरा,  
 आडच्चेसु अहिय पयायवरा । मागवग्गभीरा, मिद्धा मिदि  
 मम दित्तु ॥७॥

(पीछे ग्गमासमग्ग दना)

इच्छामि खमाममणो वंदिउं जावणिज्जाए निमीहिआए  
मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पौपध  
मुहपत्ति पडिलेहुँ ? “इच्छं”

( ऐसे कहकर मुहपत्ति पडिलेहना—पीछे खमासमण देना— )

इच्छामि खमाममणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए  
मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् पौपध  
संदिसाहुँ ? “इच्छं” इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणि-  
ज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिमह  
भगवन् ! पौपध ठाऊं “इच्छं”

ऐसा कहकर दोनों हाथ जोड़कर एक नवकार नीचे मुजव गिनना ।

नमो अरिहंताणं । नमो सिद्धाणं । नमो आयरियाणं ।  
नमो उवज्झायाणं । नमो लोए सव्व साहूणं । एसो पंच  
नमुक्कारो । सव्व पावप्पणामणो । मंगलाणं च सव्वेसिं ।  
पढमं हवइ मंगलं ॥

[पीछे ‘इच्छकारी भगवन् पस.य करी पौपध दंडक उच्चरावोजी  
ऐसे बोलकर निम्न पोसह दंडक स्वयं उच्चरे यदि गुरु या बडील  
हो तो वे उच्चरावै]

“करेमि भंते ! पोसहं, आहार-पोसहं देसओ सव्वओ,  
सरीरसकार-पोसहं सव्वओ, वंभचेर-पोसहं सव्वओ, अन्वा-  
वार-पोसहं सव्वओ, चउव्विहे पोसहे ठामि । जावदिवसं१

१ सिर्फ दिनका पौपध करना हो तो ‘जावदिवसं’ दिन रात  
का करना हो तो ‘जाव अहोरत्तं’ और सिर्फ रातका करना हो तो  
‘जावसेसदिवसं अहोरत्तं’ कहना चाहिये ।

पञ्जुवामामि दुःखं तिग्नेण, मणेण वायाए कायेणं न  
करेमि, न कारवेमि । तस्स भते ! पडिक्कामामि, निंदामि,  
गरिहामि अप्पाण वोसिरामि ॥ १ ॥”

इच्छामि खमाममणो वंढिउ जावणिज्जाए निमीहि-  
आए मत्थएण वढामि ॥ इच्छाकारेण सदिसह भगवन् !  
सामायिक मुहपत्ति पडिलेहु ? “इच्छं”

(ऐसे कहकर मुहपत्ति पडिलेहना । पीछे)

इच्छामि खमाममणो वंढिउ जावणिज्जाए निमीहि-  
आए मत्थएण वढामि ॥ इच्छाकारेण सदिसह भगवन् !  
सामायिक सदिसाहु ? “इच्छं” । इच्छामि खमाममणो  
वंढिउ जावणिज्जाए निमीहिआए मत्थएण वढामि ॥  
इच्छाकारेण सदिसह भगवन् ! सामायिक ठाउ ? “इच्छं”  
(ऐसे कहकर दोनों हाथ जोड़कर एक नमस्कार नीचे मुजब गिनना)

नमो अरिहताए । नमो सिद्धाए । नमो यायरि-  
याए । नमो उज्जभायाए । नमो लोए सब्बसाहूए ।  
एमो पच्च नमुक्कारो । सत्त पाप्पणामणो । मगलाए च  
सब्बेमिं । पढम हउड मगलं ॥

[पीछे ‘इच्छाकारा भगवन् पसाय करी सामायिक वट्ट उच्चरायोजी  
ऐसे बोलकर ‘करेमि भते’ स्वय उच्चरं यत्तं गुरु या उडील ही तो  
चे उच्चरायै]

करेमि भंते ! सामाइयं, मावज्जं जोगं पच्चन्वामि । जाव  
पोमहं पज्जुवामामि, दुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए  
काएणं न करेमि न कारवेमि तस्स भंते ! पडिक्कमामि  
निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोमिगामि ॥

[ पीछे ]

इच्छामि खमाममणो वंदिउं जावणिज्जाए निमीहि-  
आए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन्  
वेसणे संदिमाहुं ? “इच्छं” इच्छामि खमाममणो वंदिउं  
जावणिज्जाए निमीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण  
संदिसह भगवन् वेसणे टाउं ? “इच्छं” इच्छामि खमाम-  
मणो वंदिउं जावणिज्जाए निमीहिआए मत्थएण वंदामि ॥  
इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्जाय संदिमाहुं ? “इच्छं”  
इच्छामि खमाममणो वंदिउं जावणिज्जाए निमीहिआए  
मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् सज्जाय  
करुं ? “इच्छं”

[ऐसे कहकर दोनों हाथ जोडकर तीन नवकार गुणना]

इच्छामि खमाममणो वंदिउं जावणिज्जाए निमीहिआए  
मत्थएण वदामि ॥ इच्छाकारेण सदिसह भगवन् ! बहुवेलं

---

यदि पौषध मे राई प्रतिक्रमण करे तो अट्टाईजेसु सूत्र पढने  
के पूर्व दो खमासमण देकर बहुवेलं संदिसाहुं और बहुवेलं करेमि,  
का आदेश ले ।

मदिमाहुँ ? “इच्छ” इच्छामि समाममणो उदिउ जाणणि-  
ज्जाए निमीहिआए मत्थएण वदामि ॥ इच्छा कारेण  
मदिमह भगवन् ! उहुवेत्त रुणेमि ? “इच्छ”

इच्छामि समाममणो उदिउ जाणणिज्जाए निमीहिआए  
मत्थएण उदामि ॥ इच्छा कारेण मदिमह भगवन् पडिलेहण  
करु ? “इच्छ”

पीछे मुहपत्ति, चरवला, आसन, कदोरा, (सूत की त्रागडी)  
और धोती, ये पाच चीजे पडिलेहे । पीछे पडिलेहनाकी हुई धोती  
पहिन ले और उमरे जा— पुन समाममण नेकर

इच्छाकारेण मदिमह भगवन् ! इरियाउहिय पडिक्-  
मामि इच्छ । इच्छामि पडिक्मिउ, इरियाउहियाए पिराह-  
णाए । गमणागमणे, पाणक्मणे, गीयक्मणे, हरियक्मणे,  
ओसा उत्तिग-पणग-टग-मट्टी-मक्कडामताणा सरुमणे, जे  
मे जीना पिराहिया एगिदिया वेडदिया, तेडंदिया, चउरिं-  
दिया, पचिंदिया, अग्निहिया उत्तिया, लेमिया, मघाडिया,  
सघट्टिया, पग्गियापिया, क्लामिया, उदिया, ठाणाओठाण  
मंकाभिया, जीपियाओ वणोपिया तस्म मिच्छामि दुक्कड  
तम्म उत्तरीकरणेण, पायच्छित्तकरणेण पिमोहिकरणेण,  
पिमल्लीकरणेण, पाणण रुम्माण निग्घायणट्टाए, ठामि  
रुउम्मग ॥



अन्नत्थ ऊमसिएणं, नीमसिएणं, खासिएणं, छीएणं,  
जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए पित्तमुच्छ्राए,  
सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं  
दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ  
हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्का-  
रेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं भ्माणेणं अप्पाणं  
वोसिरामि ।

(यहां एक लोगस्स का या चार नवकार का काउस्सग्ग करना  
पीछे प्रगट लोगस्स कहना, वह नीचे लिखे अनुसार)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते  
कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वंदे,  
संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च  
चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअंल-सिज्जंस  
वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च  
वंदामि ॥३॥ कुंधुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमि-  
जिणं च ॥ वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥  
एवं मए अभिधुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा । चउ-  
वीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय-  
वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धां । आरुग्गवो-  
हिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा,  
आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं  
मम दिसंतु ॥७॥

- (पीछे समासमण देना)

इच्छामि समासमणो वदिउ जाणणिज्जाए निमीहिआए  
मत्थएण वदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पमाय  
करी पडिलेहणा पडिलेहाजोर्जा ? “इच्छं”

ऐसा कहकर ब्रह्मचर्य व्रतधारी किसी बड़े के उत्तरासन की  
पडिलेहना करे । पीछे

इच्छामि समासमणो वदिउ जाणणिज्जाए निमीहि-  
आए मत्थएण वदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् !  
उपधि मुहपत्ति पडिलेहुँ ? “इच्छं”

(ऐसे कहकर मुहपत्ति पडिलेहना । पीछे)

इच्छामि समासमणो वदिउ जाणणिज्जाए निमीहि-  
आए मत्थएण वदामि ॥ इच्छाकारेण मदिसह भगवन् !  
उपधि सदिमाहुँ ? “इच्छं” । इच्छामि समासमणो  
वदिउ जाणणिज्जाए निमीहिआए मत्थएण वदामि ॥  
इच्छाकारेण सदिसह भगवन् ! उपधि पडिलेहुँ ? “इच्छं”

कहकर प्रथम पडिलेहन से बाकी रहे हुए उत्तरासन (टुपट्टा)  
मात्रा (पेशात्र) करने जानेका वस्त्र और रात्रि-पौषध करना हो  
तो सधारिया, कम्बल जगैरह वस्त्र पडिलेहे । पीछे डडामण  
लेकर पडिलेहण करके फिर—

इच्छामि समासमणो । वदिउ जाणणिज्जाए निमीहि-  
आए मत्थएण वदामि ।

णाए । गमणागमणे, पाणकमणे, वीयकमणे, हरियकमणे, ओसा उत्तिग-पणग-दण-मट्टी-मकडासंजाणा संक्रमणे, जे मे जीवा विराहिया एगिंदिया वेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पचिंदिया, अभिहया वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्विया, ठाणाओठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया तस्म मिच्छामि दुक्कडं ।

तस्स उत्तरीकरणेण, पायच्छित्तकरणेण विमोहिकरणेण, विमल्लीकरणेण, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सगं ॥

अन्नत्थ ऊमसिएणं, नीमसिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्कारेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं भाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।

(यहां एक लोगस्स का या चार नवकार का काउस्सग्ग करना पीछे प्रगट लोगस्स कहना, वह नीचे लिखे अनुसार)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥१॥ उसममजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपामं, जिणं च

चदप्पहं वद ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदत्त, सीअल-सिज्जंस  
 वामुपुज्जं च । विमलमणत्तं च जिण, धम्म संतिं च  
 वंदामि ॥३॥ कुदुं अरु च मल्लिं, वदे सुणिसुव्वय नमि-  
 जिण च ॥ वदामि रिद्धनेमिं, पाम तह वदमाण च ॥४॥  
 गवं मए अभिदुया, विहययमला पहीणजरमरणा । चउ-  
 गीम पि जिणपरा, वित्थयरा मे पमीयंतु ॥५॥ कित्तिथ-  
 वट्ठिय-महिया, जे ए लोगस्म उत्तमा सिद्धा । आरुग्गवो-  
 हिलाभ, समाहिवग्गुत्तम दिंतु ॥६॥ चडेसु निम्मलयरा,  
 आइच्चंसु अहिय पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं  
 मम दिसतु ॥७॥

यहाँ मैं ठीक जगह "अणुजाणह जस्सुग्गहो" वह काजा  
 परठरना (दातना) और "वोसिरे" तीन टुफे वह फिर पहिल  
 की जगह आरु सररे का देव वदन करना मो इसी पुस्तक में है।

वाल् म जब उह घड़ी दिन चडे तत्र पउण पोरिसी पडे ।

पउण-पोरिसी की विधि

इच्छामि समाममणो वदिउ जावणिज्जाए निसीहिआए  
 मत्थएण वदामि ॥ इच्छाकारेण सदिसह भगवन् । वहुपडि-  
 पुएणा पोरिसी ? इच्छ

इच्छामि समाममणो वदिउ जावणिज्जाए निसीहि-  
 आए मत्थएण वदामि ॥ इच्छाकारेण सदिसह भगवन् ।  
 इगियावहिय पडिक्कामि इच्छ । इच्छामि पडिक्कामिउं,

हणाए गमणागमणे पाणाधमणे वीयकमणे हरियकमणे  
 ओसा उत्तिंग पणाग दग मड्डी मकडामंताणा संकमणे, जे  
 मे जीवा विराहिया, एगिंदिया, वेइंदिया, तेइंदिया, चउरिं-  
 दिया, पंचिंदिया, अभिहया, वनिया, लेमिया, संघाइया,  
 संघड्डिया, परियाविया, किलाभिया, उद्विया, ठाणाओ ठाणं  
 संकामिया, जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं, विसांहीकर-  
 णेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए, ठामि  
 काउस्सगं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीसभिएणं, खासएणं, छीएणं,  
 जंभाइएणं उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छ्राए,  
 सुहुमेहिं अंगमंचालेहिं सुहुमेहिं खेलमंचालेहिं, सुहुमेहिं  
 दिट्ठी संचालेहिं, एवमाइएहि आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ  
 हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमु-  
 कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं भाणेणं  
 अप्पाणं वोसिरामि ।

[एक लोगस्स या चार नवकार का काउस्सग्ग करना. काउ-  
 स्सग्ग पारके प्रगट लोगस्स कहना]

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतिथियरे जिणे । अरिहंते  
 कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥१॥ उमभमजिअं च वंदे,  
 संभवमभिएणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपामं, जिणं च

चंद्रप्पहं पंटे ॥२॥ सुत्रिहिं च पुष्पदंतं, मीअल-सिज्जंम  
 मासुपुज्ज च । विमलमणत च जिणं, धम्म संतिं च  
 वंदामि ॥३॥ कुबुं अर च मल्लिं, पंटे मुणिसुव्वयं नमि-  
 जिणं च ॥ उदामि रिद्धनेमिं, पाम तह वद्वमाण च ॥४॥  
 एव मए अभिधुआ, पिहुयरयमला पहीणजरमग्गा । चउ-  
 वीस पि जिणपरा, तित्थपरा मे पमीयतु ॥५॥ कित्तिय-  
 वदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गो-  
 हिलाभ, समाहिवरमुत्तम दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा,  
 आइचेसु अहिय पयासपरा । मागरवरगभीरा, मिद्धा मिद्धिं  
 मम दिमतु ॥७॥

इच्छामि समाममणो वंदितु जाणसिज्जाए निमीहि-  
 आए मत्थएण उदामि ॥ इच्छाकारेण सदिसह भगवन् !  
 राड मुहपत्ति पडिलेहुं ? “इच्छं”

( मुहपत्ति पडिलेहकर नीचे मुजन द्वारा शावर्त उटना वने )

सुगुरुवदना सूत्रं

इच्छामि समाममणो वंदितु जाणसिज्जाए निमीहि-  
 आए अणुजाणह मे मिउग्गह निमीहि, अहोकाय काय-  
 सफास, समणिज्जो मे किलामो अप्पकिलताण उहुसुभेण  
 मे राडयउडडतो ? जत्ता मे ? जणसिज्जं च मे ? एामेमि  
 समासमणो राडय वडडम्म, आणस्मिआए पडिव्वामि,  
 समासमणाण, राट्थाए आमयाणाए, तिचीमन्नयराए, ज

किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए  
 कोहाए माणाए मायाए, लोभाए, सव्वकालिआए सव्व  
 मिच्छोवयाराए सव्व धम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे  
 अइयारो कओ तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि निंदामि  
 गरिहामि अप्पाणं वोमिरामि ॥ ( फिर )

इच्छामि खमासमणो ! वंदिउं जावणिज्जाए निमीहि-  
 आए । अणुजाणह मे मिउग्गहं निसीहि, अहोकार्यं  
 कायसंफासं खमणिज्जो मे किलामो अप्पकिलंतारणं बहु-  
 सुभेण मे, राइअवइकंतो ? जत्ता मे जवणिज्जं च मे खामेमि  
 खमासमणो राइअं वइक्कम्मं पडिक्कमामि खमासवणाए,  
 राइआए आसायणाए तितीसन्नयराए, जं किंचि मिच्छाए  
 मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए  
 मायाए लोभाए सव्वकालिआए सव्व मिच्छोवयाराए सव्व  
 धम्माइक्कमणाए आसायणाए जो मे अइयारो कओ तस्स  
 खमासमणो ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं  
 वोसिरामि ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् राइअं आलोउं ? 'इच्छं'  
 आलोएमि । जो मे राइओ अइआरो कओ, कइओ वाइओ  
 माणसिओ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो  
 दुज्झाओ दुव्विचित्तिओ अणायारो अणिच्छिअव्वो  
 अमावगपाउग्गो नाणे दंसणे चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए ।

तिएहं गुत्तीणं, चउएहं क्रमायाणं पचएहमणुव्वयाण,  
 तिएहं गुणव्वयाण, चउएहं मिकयाणयाण पारसविहस्स  
 माणगधम्मस्स लं सडियं ज पिगहियं तस्म मिच्छामि  
 दुक्खड ॥

सव्वस्सवि राडय दुच्चितिय दुब्भासिय दुच्चिट्ठिय,  
 इच्छाकारेण मदिमह भगवन् । “इच्छ” तस्स मिच्छामि  
 दुक्खड ॥

( पन्यास आदि पदस्थ हो तो उपर मुजप दो नफे वादणा  
 देना और पदस्थ न हो तो एर गमासमण देकर )

इच्छामि समासमणो षडिउ जाणणिज्जाए निमीहियाए  
 मत्थएण वदामि । “इच्छकारि सुहराड सुखतप शरीर  
 निरापाध सुखसयम यात्रा निर्महते होजी । स्वामी माता  
 हैजी भात पाणी का लाभ देनाजी ।”

इच्छामि समासमणो ! षडिउ जाणणिज्जाए निमीहि-  
 याए मत्थएण वदामि ॥

गमासमण देकर खडा होये और दोनों हाथ जोडकर —

इच्छाकारेण संदिमह भगवन् । अण्भुट्टियोमि अण्भि-  
 तर राडयः खामेउ ? “इच्छ खामेमि राडय” जकिंचि  
 अपत्तियं, परपत्तिय भत्ते पाणे पिणए वेयाणन्चे आलावे

---

इधारा वजे पीछे जहा “राडय” बोलना लिखा है वहा  
 “देवसि” बोलना ।



सूरे उग्गाए, अञ्चत्तड्डं पञ्चक्खाइ । तिविहंपि आहारं—  
 असणं, खाइमं, साइमं; अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं,  
 पारिद्धावणियागारेणं, महत्तरागारेणं, सब्वसमाहिवत्तियां-  
 गारेणं । पाणहार पोरिसिं, साढपोरिसिं, मुंडिसिहियं  
 पञ्चक्खाइ; अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं,  
 दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, महत्तरागारेणं, सब्वसमाहिवत्ति-  
 यागारेणं पाणस्स लेवेण वा, अलेवेण वा, अच्छेण वा,  
 बहुलेवेण वा, ससित्थेण वा, अमित्थेण वा वोसिरइ ।

चउव्विहार उपवास—पञ्चक्खाण

सूरे उग्गाए अञ्चत्तड्डं पञ्चक्खाइ । चउव्विहंपि आहारं—  
 असणं, पाणं, खाइमं, साइमं; अन्नत्थणाभोगेणं, सहसा-  
 गारेणं, पारिद्धावणियागारेणं, महत्तरागारेणं सब्वममाहि-  
 वत्तियागारेणं वोसिरइ ।

### ★ देव दर्शन विधि ★

पौषध लेने के पीछे श्री जिन मन्दिरजी में दर्शन करने को  
 जरूर जाना चाहिये । इस वास्ते आसन को दायें कंधे पर रखना,  
 उत्तरासण करना, चरवला दायीं वगल में और मुंहपत्ति दाहिने  
 हाथ में रखना, काल का वक्त हो तो कमली ओढ़ना, और  
 उपाश्रय (पौषधशाला) में से निकलते हुए तीनंदार “आवस्सहि”  
 कहके सौन पने इरियासमिति (जीवजंतु) देखते हुए श्री जिन  
 मन्दिरजी मे जावे । वहां तीन वार “निसीहि” कह करके ।  
 मूल नायकजी के सम्मुख होकर दूर से प्रणाम करके तीन प्रदं-  
 क्षिणा देवे ! पीछे रंग मंडप मे प्रवेश कर दर्शन, स्तुति करे—

✽ दर्शन स्तुति ✽

दर्शन देव देवस्य, दर्शन पापनाशनम् ।

दर्शनं स्वर्ग सोपानं, दर्शन मोक्षमाधनम् ॥१॥

दर्शनाद् दुरितध्वमी, रन्दनाद् गच्छितप्रदः ।

पूजनान् पूरकः श्रीणा, जिन सात्वान् मुरट्टमः ॥२॥

त्रिजग नायक तु वणी, मही महोदो महाराज,

महोदो पुण्ये पामियो, तुम दरिमण हूँ आज ॥३॥

आज मनोरथ मत्रि फल्या, प्रगत्या पुण्यरुञ्जोल,

पाप कर्म दूरे टल्या, नाटा दुःख टदोल ॥४॥

ज्ञानारणीय क्षय करी, दर्शनारणीय कर्म,

वेदनीय कर्म दूरे करी, टान्यु मोहनीय कर्म ॥५॥

इच्छामि तपाममणो रंजित जारणिज्जाण निमीहिआण

मत्यएण वंदामि ॥

इच्छाकारेण मदिमह भगवन् ! हरियात्रहिय पडिक्-  
मामि ! इच्छ इच्छामि पडिक्मिऊ, हरियात्रहियाण, तिराह-  
णाए । गमणागमणे, पाणयमणे, प्रीयवमणे, हरियवमणे,  
ओमा उत्तिग-पणग-टग-मट्टी-मवडामाणा मरुमणे, जे  
मे जीना तिराहिया एगिंदिया त्रेडदिया, तेडदिया, चउरिं-  
दिया, पचिंदिया, अभिहया वत्तिया, लेमिया, मघाडया,  
सघट्टिया, परियात्रिया, त्रिलामिया, उट्टिया, टाणाओठाण  
मरुमिया, जीत्रियाओ तरोविया तस्म मिच्छामि दुवड ।

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं विसोहि करणेणं,  
विसल्लीकरणेणं, पात्राणं कम्मणां निग्वायणट्टाए, ठामि  
काउस्सग्गं ॥

अन्नत्य ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं,  
जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए पित्तमुच्छाए,  
सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं  
दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ  
हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्का-  
रेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं भाणेणं अप्पाणं  
वोसिरामि ।

(यहां एक लोगस्स का या चार नवकार का काउस्सग्ग करना  
पीछे प्रगट लोगस्स कहना, वह नीचे लिखे अनुसार)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थियरे जिणे । अरिहंते  
कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वंदे,  
संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च  
चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस  
वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च  
वंदामि ॥३॥ कुंधुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमि-  
जिणं च ॥ वंदामि रट्टनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥  
एवं मए अभिधुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा । चउ-  
वीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्तिय-

वंदिय-महिया, जे ए लोगम्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गो-  
हिलाभ, ममाटिपरसुत्तमं दिंतु ॥६॥ चढेसु निम्मलपरा,  
आइचेसु अहिय पयासयरा । सागरवरगभीरा, सिद्धा सिद्धि  
मम दिसंतु ॥७॥

इच्छामि एमाममणो वंदिउ जाणणिज्जाए निसीहि-  
आए मत्थएण वढामि ॥

( इस प्रकार तीन गमाममण देकर— )

इच्छाकारेण सदिसह भगवन् ! चैत्यउदन उरू ?

“इच्छ”

सरुलकुशलमल्लि, पुण्णरावर्तमेधो ॥

दुरिततिमिरभानुः, कल्प-वृक्षोपमान' ॥१॥

भवजलनिधिपोत, सर्व सम्पत्ति हेतुः ॥

स भवतु सज्जतं व. श्रेयसे शान्तिनाथ'

—श्रेयसे पार्ष्णनाथः ॥२॥

॥ चैत्यउन्दन ॥

आज देव अरिहन्त नमूं, समरु तोरा नाम ।

ज्या ज्या प्रतिमा जिनतणी, त्या त्या कर्हं प्रणाम ॥१॥

शत्रुञ्जय श्री आदि देव, नेम नमूं गिरनार ।

तारगे श्री यजितनाथ, यात्रू ऋषभ जुहार ॥२॥

अष्टापद गिरि ऊपरे, जिन चोरीमी जोय ।

मणिमय मूरति मानसुं, भस्ते भराया सोय ॥३॥

समेत शिखर तीर्थ वडा, ज्यां वीसे जिन पाय ।  
 वैभारक गिरि ऊपरे, श्री वीर जिनेश्वर राय ॥४॥  
 मांडवगढ़ नो राजियो, नामे देव सुपास ।  
 ऋपभ कहे जिन समरतां, पंहुचे मन की आस ॥५॥

जं किंचि नामतित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए ।  
 जाई जिणविंवाई, ताई सव्वाई वंदामि ॥१॥

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥ आङ्गराणं,  
 तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं ॥२॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं,  
 पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं ॥३॥ लोगुत्तमाणं,  
 लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपर्ईवाणं, लोगपज्जोअग-  
 राणं ॥ ४ ॥ अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं,  
 सरणदयाणं, बोहिदयाणं ॥५॥ धम्मंदयाणं, धम्मदेसिआणं,  
 धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्ठीणं  
 ॥६॥ अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं; विअट्ठउमाणं ॥७॥  
 जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं,  
 मुत्ताणं मोअगाणं ॥८॥ सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं, सिवमय-  
 लमरुअमणंतमक्खयमव्वावाहमपुणरावित्ति, सिद्धिगइनाम-  
 धेयं, ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअभयाणं ॥९॥  
 जे अ अइआ सिद्धा, जे अ भविस्संतिणागए काले ।  
 संपइअ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥१०॥

जापंति चेडआडं, उड्ढेअ अहे अ तिरिअ लोए अ ।  
सव्वाड ताडं पंढे, इह सतो तत्थ सताडं ॥१॥

इच्छामि समासमणो वदिउ जापणिज्जाए निसीहि-  
आए मत्थएण पंदामि ॥

जावत केणि साहू, भरहेरवय महाविदेहे अ । सव्वेमिं  
तेसिं पणयो, तिविहेण तिदंड विरयाण ॥१॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥

श्री ऋषभदेवजी का स्तवन ।

जग जीवनजग वहाला हो, मारु देवीनो नंदलाल रे ।  
सुख दीठे सुख ऊपजे, दर्शन अति ही आणद लालरे ॥१॥  
आएडी अनुज पाएडी, अष्टमी रासी समभल लालरे ।  
चदन ते शारद चंदलो, वाणी अनिरसाल लालरे ॥२॥  
लक्षण अगे मिरानता, अडहीय सहस उदार लालरे ।  
रेखा कर चरणा दिके, अर्भितर नहीं पार लालरे ॥३॥  
इंद्र चन्द्र रनि गिरितणा, गुण लइ धणीयुं अग लालरे ।  
भाग्य क्रिया थकी आनीयुं, अचिरज एह उत्तग लालरे ॥४॥  
गुण सघला अंगे कर्या, दूर कर्या समी दोष लालरे ।  
वाचक जश मिजये धुएयो, देजो सुएनो पोए लालरे ॥५॥

उपसगहरं पास, पाम पदामि कम्मघणमुक् । विसहर-  
विमनिवास, मंगलरुद्धाण-आवास ॥१॥ विसहर फुलिंगमत,

कंठे धारेइ जो सया मणुओ । तस्म गहरोगमारी, दुइजरा  
जंति उवसामं ॥२॥ चिड्डुउ दूरे मंतो, तुज्क पणामो वि  
बहुफलो होइ । नरतिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्खदोगचं  
॥३॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणिकप्पपायवब्भहिण्ण ।  
पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥४॥ इय संधुओ  
महायस, भत्तिव्भरनिव्भरेण हिअएण । ता देव दिज्जवोहिं,  
भवे भवे पामजिणचंद ॥५॥

( अब दोनों हाथ जोडकर जय वीअराय कहना )

जय वीअराय ! जगगुरु !, होउ ममं तुह पभावओ  
भयवं ! भवनिव्वेओ मग्गाणुसारिआ इड्डुफलसिद्धि ॥१॥  
लोगविरुद्धचाओ, गुरुजणपूआ परत्थकरणं च । सुहगुरुजोगो  
तव्वयणसेवणा आभवमखंडा ॥२॥ वारिज्जइ जइ वि  
निआण वंधणं वीअराय तुह समए । तह वि मम हुज्ज  
सेवा, भवे भवे तुम्ह चलणाणं ॥३॥ दुक्खखओ कम्मखओ,  
समाहिमरणं च वोहिलाभो अ । संपज्जउ महएअं, तुहनाह  
पणाम करणेणं ॥४॥ सर्वमंगलमांगल्यं, सर्वकल्याणकारणम् ।  
प्रधानं सर्वधर्माणां जैनं जयति शासनम् ॥५॥

अरिहंतचेइआणं, करेमि काउस्सगं, वंदणवत्तिआए,  
पूअणवत्तिआए, सकारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, वोहि-  
लाभ वत्तिआए, निरुवसगावत्तिआए, सिद्धाए, मेहाए,  
धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि  
काउस्सगं ॥

अन्नत्थ ऊमिएणं, नीससिएण, रासिएणं, छीएणं,  
जंभाडण, उड्डुएणं, वायनिसग्गेण, भभलीए, पित्तमुच्छाए,  
सुद्धुमेहिं अगसचालेहि. सुद्धुमेहिं खेलमचालेहिं, सुद्धुमेहिं  
दिट्ठिसचालेहिं, एणमाडएहिं आगारेहिं अभग्गो अत्रिराहिओ,  
हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाण अरिहंताणं भगवंताणं नमु-  
कारेणं न पारेमि ताण ऋयं ठाणेणं मोखेण भाणेणं  
अप्पाएण पोसिरामि ।

(यहाँ एक नदवार का काउस्सग्ग कर “नमोऽर्हत्सिद्धाचार्यो-  
पाध्याय सर्वमाधुभ्य ” कह कर थुइ कहना)–

आदि जिनर राया जाम सौवन काया,  
मरुदेयी माया, घोरी लंछन पाया ।  
जगत् स्थिति निपाया, शुद्र चारित्र पाया,  
केवल मिरीराया मोक्ष नगरी मिधाया ॥१॥

फिर प्रभु के सन्मुख पञ्चम्याण करना, पीछे जिन मट्टि  
जी से निकलते हुये तीन दफे “आप्तस्सहि” कहना और उपाश्रय  
में तीन दफे “अनसीहि” कह कर प्रवेश करना और १०० पावडे  
भूमि से आगे गया हो तो इरियाददि करके—

इच्छामि समासमणो वंदिउ जाणग्गिज्जाए निसीहिआए  
मत्थएण वंदामि ?

इच्छाकरेण सदमिह भगवन् ! इरियादहियं पडिक्-  
मामि । इच्छ इच्छामि पटिक्मिऊ, इरियादहियाए, निराह-



हुई होय, तै सविहुं मन वचन काया ए करी मिच्छामि  
दुक्कडं ॥

(इसके पश्चात् दोपहर में देववन्दन करना चाहिए जो इस पुस्तक में आगे दिया हुआ है इस में सञ्जाय न बोले। देववन्दन अकाल में (११॥ वजे से १२ वजे तक) न करें। यदि वर्षा ऋतु (आषाढ सुदी १५ से कार्तिक सुदी १४ तक) में दोपहर के देववन्दन से पहिले भूमि प्रसार्जन करना आवश्यक है, इन दिनों में तीन बार पहिले भूमि प्रसार्जन करना चाहिए। उसकी विधि इसी पुस्तक के पृष्ठ १७ की १८ वी पंक्ति से आरम्भ होकर पृष्ठ २१ की १३ पंक्ति तक दिया है उसके अनुसार करें।

### पञ्चक्खाण पारने की विधि

एगासण, एकलठाणा, आयंवील, आदि तिविहार उपवास के व्रत का पञ्चक्खाण पारना होतो निम्न प्रकार से क्रिया करे। परन्तु मव्याह्न का देववन्दन करके पञ्चक्खाण पारे।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए  
मत्थएण वंदामि ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इरियावहियं पडिक्क-  
मामि ! इच्छं इच्छामि पडिक्कमिउं, इरियावहियाए, विराह-  
णाए, गमणागमणे, पाणाकमणे, वीयकमणे, हरियकमणे,  
ओसा उतिंग-पणाग-दग-मट्टी-मक्कडासंताणा संकमणे, जे  
मे जीवा विराहिया एगिंदिया वेइंदिया, तेइंदिया, चउरिं-

दिया, पचिदिया, अभिहया पत्तिया, लेसिया, मंत्राड्या, मधद्विया परियापिया, क्लामिया, उदिया, ठाणाओठाण मकामिया, जीपियाओ पनगेपिया तस्स मिच्छामि दुक्कड ।

तस्म उत्तरीकरणेण, पायच्छित्तकरणेण विमोहिकरणेण, निमल्लीकरणेण, पायाण कम्मण निग्घायणद्धाए, ठामि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ उममिएण, नीसमिएण, यासिएण, छीएण, जंभाइएण, उट्टुएण, पायनिमग्गेण, भमलिए पित्तमुच्छाए, सुट्टुमेहिं अगसचालेहिं, सुट्टुमेहिं खेलमचालेहिं, सुट्टुमेहिं दिट्ठिमचालेहिं, एणमाइएहिं आगारेहिं अमग्गो अपिराहिओ ढुज्ज मे काउस्सग्गो । जाप अरिहताण भगवताण, नमुक्कारेण न पारेमि ताप काय ठाणेण मोणेण भाणेण अप्पाण गोमिरामि ।

(यहा एक लोगस्स का या चार नदकार का काउस्सग्ग करना पीछे प्रगट लोगस्स कहना, वह नीचे लिखे अनुसार)

लोगस्म उज्जोअगरे, धम्मतिथियरे जिणे । अरिहते क्कित्तइस्स, चउपीम पि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वदे, मभयमभिणटणं च सुमड च । पउमप्पह सुपास, जिणं च चटप्पहं वदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फटत, सीअल-सिज्जम गामुपुज्जं च । निमलमणत च जिण, धम्म सतिं च पदामि ॥३॥ कुयु अर च मल्लि, वदे सुणिसुव्वय नमि-

जिणं च ॥ वंदामि रिद्धनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥  
 एवं मए अभिधुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा । चउ-  
 वीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्थिय-  
 वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गवो-  
 हिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दितु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा,  
 आइचेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं  
 मम दिसंतु ॥७॥

इच्छामि खमासमणो वंदितुं जात्रणिज्जाए निमीहि-  
 आए मत्थएण वंदामि ॥

( खमासमण देकर— )

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! चैत्यवंदन करूं ?  
 “इच्छं”

जगचिंतामणि चैत्यवंदन

जगचिन्तामणि जगनाह, जगगुरु जगरक्खण, जगबंधव  
 जगमत्थवाह, जगभावविअक्खण, अठावयसंठवियरूव,  
 कम्मवृत्तिणासण, चउवीसंपि जिणवर जयन्तु, अप्पडिहय-  
 सासाणं ॥१॥ कम्मभूमिहिं कम्मभूमिहिं पढमसंधयणि,  
 उक्कोसय सत्तरिसय, जिणवराण विहरंत लब्भइ । नव-  
 कोडिहिं केवलीण, कोडीसहस्स नव साहु गम्मइ । संपइ  
 जिणवर वीस मुणि, विहुकोडिहिं वरणाण, समणह कोडी-  
 सहस्स दुअ, धुणिजिअ निच्च विहाणि ॥२॥ जयउ सामिय

जयउ सामिय रिसह सत्तुंजि, उज्जित पहु नेमिजिण,  
जयउ वीर सच्चउरिमडण, भरुअच्छहिं मुणिसुव्वय, मुहरि-  
पास दुहदरिअरुडण, अररविदेहिं तित्थयरा, चिहु दिसि  
विदिसि जिं के पि तीआणागयसपडअ उदु जिण सव्वेणि  
॥३॥ सत्ताणउड सहम्मा, लक्खा छप्पन्न अट्ट कोडीओ ।  
वत्तिसय वासियाडं, तियल्लोए चेडए वंदे ॥४॥ पनरस  
कोडिसयाडं, कोडि वायाल लक्ख अडपन्ना । छत्तीस सहस  
असिडं (असियाड), सामयपिनाड पणमामि ॥५॥

जं किंचि नामतित्थ, सग्गे पायालि माणुसे लोए ।  
जाडं जिणपिनाडं, ताड सव्वाडं वदामि ॥१॥

नमुत्तुण अरिहताण भगवताणं ॥ १ ॥ आइगराणं,  
तित्थयराण, सयंसयुद्धाण ॥२॥ पुरिसुत्तमाण, पुरिससीहाण,  
पुरिसअरपुडरीआण, पुरिसअरगं वहत्थीण ॥३॥ लोगुत्तमाणं,  
लोगनाहाण, लोगहियाण, लोगपर्दनाण, लोगपज्जोअग-  
राण ॥ ४ ॥ अभयदयाण, चक्खुदयाण, मग्गदयाण,  
सरणदयाण, बोहिट्टयाण ॥५॥ धम्मदयाण, धम्मदेसियाण,  
धम्मनायगाण, धम्मसारहीण, धम्मअरचाउरतचक्खुट्ठीण  
॥६॥ अप्पडिहयअरनाणटसणधराण, अियट्टुत्तमाण ॥७॥  
जिणाण जाययाण, तिन्नाण तारयाण, उद्धाण गोहयाण,  
मुत्ताण मोअगाणं ॥८॥ सव्वन्नूय सत्तदरिसीण, सिअमय-  
लमरुअमणतमअयमअनाहमपुणरावित्ति, मिट्ठिगट्टनाम-

धेयं, ठाणं मंपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअभयाणं ॥६॥  
 जे अ अइया मिद्धा, जे अ भविस्मंतिणाए काले ।  
 संपइअ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥१०॥

जावंनि चेइयाइं, उड्ढेअ अहे अ तिरिअ लोए अ ।  
 सव्वाइं ताइं वंदे, इह मंतो तत्थ संताइं ॥१॥

इच्छामि खमाममणो वंदिउं जावणिज्जाए निर्माहि-  
 आए मत्थएण वंदामि ॥

जावंत केवि माहू, भरहेरवय महाविदेहे अ । मव्वेमिं  
 तेसिं पणुओ, तिविहेण तिदंड विरयाणं ॥१॥

नमोऽर्हत्तिग्घाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥

उवसग्गहरं पासं, पामं वंदामि कम्मवणमुक्कं । विसहर-  
 विमनिन्नासं, मंगलकल्लाण-आवासं ॥१॥ विसहर फुलिं गमंतं,  
 कंठे धारेइ जो सया मणुओ । तस्म गहरोगमारी, दुडुंजरा  
 जंति उवसामं ॥२॥ चिड्डुउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि  
 बहुफलो होइ । नरतिरिएमु वि जीवा, पावंति न दुक्खदोगच्चं  
 ॥३॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणिकप्पपायवच्चमहिए ।  
 पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥४॥ इय संधुओ  
 महायस, भत्तिव्वरनिव्वरेण हिअएण । ता देव दिज्जवोहिं,  
 भवे भवे पासजिणचंद ॥५॥

( अब दोनों हाथ जोडकर जय वीअराय कहना )

जय वीअराय ! जगगुरु !, होउ ममं तुह पभावओ

भयम् । भयनिन्वेद्यो मग्गाणुसारित्र्या इद्वृफलसिद्धि ॥१॥  
 लोगनिद्रुद्वाद्यो, गुरुजणपृथ्या परत्थरुग्ण च । सुहगुरुजोगो  
 तन्त्रयणसेपणा आभयमसंडा ॥२॥ वारिज्जड जड नि  
 नित्र्याण ववण वीअराय तुह समए । तह नि मम हुज्ज  
 सेमा, भये भवे तुम्ह चलणाण ॥३॥ दुक्खरस्यो रम्मएओ,  
 समाहिमग्ण च बोहिलाभो अ । सपज्जउ महएअ, तुहनाह  
 पणाम करुण्ण ॥४॥ सर्वमंगलमागल्य, सर्वकल्याणकारणम् ।  
 प्रधान सर्ववर्माणा जैन जयति शामनम् ॥५॥

इच्छामि समासमणो यदिउ जात्रणिज्जाए निमीहिआए  
 मत्थएण उदामि ? इच्छाकरेण मदिसह भगवन् ! सज्जाय  
 क्वं ? ' इच्छ'

( एक नवकार नीचे मुजव गिनना )

नमो अरिहताण । नमो मिद्धाण । नमो आयरियाण ।  
 नमो उपज्जायाण । नमो लोए सव्वसाहूण । एमो पच नमु-  
 षारो । सव्वपात्रप्पणाभणो । मंगलाणं च मन्त्रेसिं पढम  
 हउड मगल ॥१॥

फिर मन्नह जिणाण सज्जाय निम्न प्रकार से कहना—

अथ मन्नह जिणाण सज्जाय ।

मन्नह जिणाणमाण, मिच्छ परिहरह धरह सम्पत्त ।  
 छव्विह आत्रस्तयम्मि, उज्जत्तो होइ पडदिउम ॥ १ ॥  
 पचेमु पोमहपय, दाण सील तपो अ भापो अ ।

मूंह पूंछ कर ( प्रसार्जन कर ) हो मकं जय तक मुनि महाराज को बोहरा कर निश्चल (स्थिर) आसन से सौन रग्व आहार करना, अँठा नहीं डालना और थाली धोकर पीना. बगैर कारण स्वादिष्ट आहार और लविगादि तांत्रुल (मुखवास) न लेना और मुख शुद्ध कर दिवस चरिम तिविहार का पञ्चक्रवाण करना और जिसको घर न जाना हो, वह पहले पुत्र नौकरादि को कहा हो उसका लाया हुआ आहार ऊपर लिखि विधि से पौपधशाला में ही करे और फिर बाद पौपधशाला में आकर “इरियावहि पडिक्म” कर ( सो पावंडे हों तो गमणागमणे आलोय कर ) पुनः जगर्चितामणि का चैत्यवंदन जयवीरराय तक करना ।

**पौपध में पेशाव (मात्रा वा स्पंडिल) जाने की विधि ।**

पेशाव व पाखाने जाने के वक्त पहनने को धोती पहनना, कामली का काल हो तो सिर व वदन पर कामली ओढनी, मुंहपत्ति कंदोरे में रखनी, चरवला डात्री बगल में रखना, रात का वक्त हो तो दंडासन से इरियासमिति सोधते चलना । पेशाव करना हो तो कूंडी पूंजकर उसमें पेशाव कर परठवने (पेशाव जमीन पर डालने) की जगह कूंडी रखनी, निर्जीव जगह देख “अणुजाणह जस्सुगो” कह कर पेशाव जमीन पर डालना, फिर कूंडी नीचे रख तीन दफे “वोसिरे” कहना और कूंडी अचित्त जल से धोकर उसके स्थान पर रख फिर अपने हाथ धोना ।

पाखाने जाना हो तो निर्जीव जगह देख “अणुजाणह

जस्सुगो" कहकर पायाने जाना और शुद्धि करके तीन दफे "बोसिरे" कहना और वापिस आकर हाथ पग धोना और पायाने की शका दिनही को निराकरण कर लेनी चाहिये क्योंकि रात्रि को पायाने जाने में जीव जतु की जतना न रहने से बहुत दोष लागता है और जाना ही पडे तो १०० हाथ जगह के अदर जाना, धोती बदलने बाद इरियावहि पडिक्मना ।

सिर्फ रात्रि के चार पहर का पौषध लेने की विधि ।

रात्रि के चार पहर का पोषध लेने वालों को पडिलेहण और देववदन की क्रिया दिन में ही करने की है जिससे पौषध जल्दी शुरु करना चाहिये । उसकी विधि इसी पुस्तक के पृष्ठ ६ वे से आरम्भ होकर पृष्ठ १५ की ३ पक्ति तक ( बहुवेल करेमि ? "इच्छ" तक ) दिया है उसके अनुसार कर के बाद में शाम के पडिलेहण में इच्छामि० ग्रमासमण देकर "पडिलहण करु ? इच्छ" में शुरु करे । उसकी विधि इसी पुस्तक में आगे "पिद्धले पहर को पडिलेहण करने की विधि" में है, उसके अनुसार करें ।

सुबह चार पहर का पौषध लिया हो और पीछे—

आठ पहर का पौषध लेने की विधि ।

पिद्धले पहर को पडिलेहण करने की विधि में "गमणा-गमणे" आलोचकर, फिर इसी पुस्तक के पृष्ठ १० की ७ वीं पक्ति से आरम्भ होकर पृष्ठ १५ की ३ पक्ति तक ( बहुवेल करेमि ? "इच्छ" तक ) दिया है उसके अनुसार करे परन्तु "सज्जाय



करूँ” की जगह “सञ्जाय मे हूँ” कहना और तीन नवकार की जगह १ नवकार गिनना । फिर वाद में शाम के पडिलेहण में “इच्छामि० खमासमण देकर “पडिलेहण करूँ ? “इच्छं” से शुरु करे । उसकी विधि इसी पुस्तक में आगे “पिछले पहर को पडिलेहण करने की विधि में है । उसके अनुसार करे ।

पिछले पहर को पडिलेहण करने की विधि ।

( मुनिराज ने स्थापनाचार्य की पडिलेहण की हो उसके सामने छः घड़ी दिन रहे उस समय पडिलेहण करना, स्थापनाचार्य की पडिलेहण किये पहिले पडिलेहण नहीं होती ।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निमीहि-  
आए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् !  
बहुपडिपुएणा पोरिसी ? “इच्छं”

( पुनः खमासमण देकर इसी पुस्तक के पृष्ठ ३७ के १२ वीं पंक्ति से प्रारम्भ करके पृष्ठ ४० की २ पंक्ति तक (“गसणागमणे” आलोय तक) दिया है उसके अनुसार क्रिया करे । पीछे:—

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-  
आए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् !  
पडिलेहण करूँ ? “इच्छं”

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-  
आए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् !  
पोषधशाला प्रनाजू ? “इच्छं”

( कह उपवास वाले को मुहपत्ति, चरवला, आमन, पडिलेहना और एनासणादि करने वाले को कटोरा (सूत की तागडी) व धोती समेत पांच उपकरण पडिलेहन करके गमासमण देकर इरियात्रहि पडिष्म करवे )

इच्छामि खमासमणो वंदिउ जावणिज्जाए निमीहिआए मत्थएण वदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! पमाय करी पडिलेहणा पडिलेहानोवी ? "इच्छ"

ऐसा कहकर ब्रह्मचर्य धतधारी किमी उडे के उत्तरासन की पडिलेहना करे । पीछे

इच्छामि खमाममणो वदिउं जावणिज्जाए निमीहिआए मत्थएण वदामि ॥ इच्छाकारेण सदिसह भगवन् ! उपधि मुहपत्ति पडिलेहुं ? "इच्छ"

ऐसे कहकर मुहपत्ति पडिलेहना । पीछे

इच्छामि गमाममणो वदिउं जावणिज्जाए निमीहिआए मत्थएण वदामि ? इच्छाकारेण सदिसह भगवन् ! सज्जाय करे ? "इच्छ"

एष तथकार पदपर "मअत्त चित्ताण" की मग्गय उफड बैठ (गडे पुटने बैठ) कर जाता ।

नमो अग्गिताणं । नमो निद्धाणं । नमो आयग्गियाणं ।

नमो उवञ्जायाणं । नमो लोए मव्वसाहूणं । एसो पंच नमु-  
 क्कारो । सव्वपावप्पणामणो । मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं  
 हवइ मंगलं ॥१॥

अथ मन्नह जिणाणं सज्जाय ।

मन्नह जिणाणमाणं, मिच्छं परिहरह धरह सम्मत्तं ।  
 छव्विह आवस्सयम्मि, उज्जुत्तो होइ पइदिवसं ॥ १ ॥  
 पव्वेसु पोसहवयं, दाणं सीलं तवो अ भावो अ ।  
 सज्जाय नमुक्कारो, परोवयारो अ जयणा अ ॥ २ ॥  
 जिणपूआ जिणधुणणं, गुरुधुअ साहम्मिआण वच्छल्लं ।  
 ववहारस्स य सुद्धी, रहजत्ता तित्थजत्ता य ॥ ३ ॥  
 उवसम विवेग संवर, भासासमिई छजीव करुणा य ।  
 धम्मिअजणसंसग्गो, करणदमो चरणपरिणामो ॥ ४ ॥  
 संघोवरि बहुमाणो, पुत्थयलिहणं पभावणा तित्थे ।  
 सड्ढाण किच्चमेअं, निव्वं सुगुरुवएसेणं ॥ ५ ॥इति॥

( फिर भोजन किया हो तो द्वादशावर्त्त वन्दना देवे, इसी  
 पुस्तक के पृष्ठ २५ की १५ वीं पंक्ति से प्रारम्भ होकर पृष्ठ २६  
 की १६ पंक्ति तक दिया है उसके अनुसार करें । और तिविहार  
 उपवास वाला सिर्फ खमासमण दे )

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-  
 आए मत्थएण्ण वंढामि ? इच्छाकारेण संदिसह भगवन् !  
 पसायकरी पञ्चक्खाण का आदेश दीजियेजी ।

ऐसा कहकर पाणहार का पञ्चम्याण करे ।❀

### पाणहार-पञ्चम्याण

पाणहार दिनसचरिम पञ्चम्याइ । 'अन्नत्थणाभोगेणं,  
सहसागारेणं, महत्तरागारेण, सव्वसमाहिमत्तियागारेण  
चोसिरइ ।

इच्छामि एमासमणो वदिउं जावणिज्जाए निसीहि-  
आए मत्थएण वदामि ? इच्छाकारेण संदिसह भगवन् !  
उपधि संदिसाहुं ? "इच्छ" । इच्छामि एमासमणो वदिउं  
जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वदामि ॥ इच्छाकारेण  
सदिसह भगवन् ! उपधि पडिलेहुं ? "इच्छ"

कहकर प्रथम पटिलहन से बाकी रहे हुए उत्तरासन (दुपट्ट)  
मात्रा (पेशान) करने जाने का वस्त्र और रात्रि-पौषध करना हो  
तो सधारिया, कम्जल बगैरह वस्त्र पडिलेहे । पीछे डंडासण  
लेकर पडिलेहण करके फिर एमासमण देकर इरियावाह पडिबम  
करके कुडा कचरा निकाले उसकी विधि इसी पुस्तक के पृष्ठ  
१७ की १८ वीं पक्ति से आरम्भ होकर पृष्ठ २१ की १२ वीं

❀चउच्चिहार-उपवास किया हो तो इस वक्त पञ्चम्याण  
करने की जरूरत नहीं है, परन्तु सुगह तिथिहार का पञ्चम्याण  
किया हो और पानी न पिया हो तो इस वक्त चउच्चिहार-उपवास  
का पञ्चम्याण करे । उसका पञ्चम्याण इस पुस्तक के पृष्ठ ३०  
में लिया है ।

पंक्ति तक दिया है उसके अनुसार करें । पीछे देववन्दन करना, जो इस पुस्तक में आगे दिया हुआ है इस समय भी सज्जाय न बोले । जिसने आठ पहर का पोसह लिया हो या जिसने केवल रात्रि-पौषध किया हो वह देववन्दन करके पीछे कुण्डल (कान में डालने के लिये रुई), डंडासन और रात्रि की शुचि के लिए चूना डाला हुआ अचित पानी याचना करके लेवे । पीछे—

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-  
आए मत्थएण वंदांमि ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इरियावहियं पडिक्क-  
मामि ! इच्छं इच्छामि पडिक्कमिऊं, इरियावहियाए, विराह-  
णाए, गमणागमणे, पाणक्कमणे, वीयक्कमणे, हरियक्कमणे,  
ओसा उतिंग-पणग-दग-मट्टी-मक्कडासंताणा संकमणे, जे  
मे जीवा विराहिया एगिंदिया वेइंदिया, तेइंदिया, चउरिं-  
दिया, पंचिंदिया, अभिहया वत्तिया, लेसिया, संघाइया,  
संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्विया, ठाणाओठाणं  
संक्रामिया, जीवियाओ वन्नोविया तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

तस्स उत्तरीकरणं, पायच्छित्तकरणं विसोहिकरणं,  
विसल्लीकरणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए, ठामि  
काउस्सगं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं,  
जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भम्मलिए पित्तमुच्छाए,

सुदुमेहिं अंगसचालेहिं, सुदुमेहिं खेलसचालेहिं, सुदुमेहिं  
दिद्विमचालेहिं, एणमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अपिराहियो  
हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाय अरिहताण भगवताण, नमुक्का-  
रेण न पारेमि ताव कायं ठाणेण मोणेण भाणेण अप्पाण  
गेमिरामि ।

(यहा एक लोगस्स का या चार नवकार का काउस्सग्ग करना  
पीछे प्रगट लोगस्स कहना, वह नीचे लिखे अनुसार)

लोगस्म उज्जोअगरे, धम्मतित्थपरे जिणे । अरिहते  
फित्तइस्स, चउवीसं पि केवली ॥१॥ उमभमजिअ च वदे,  
सभअमभिणदण च सुमइ च । पउमप्पहं सुपास, जिण च  
चटप्पहं वदे ॥२॥ सुनिहिं च पुप्फटत, मीअल-सिज्जंस  
वासुपुज्जं च । निमलमणत च जिणं, धम्मं सतिं च  
वदामि ॥३॥ कुयु अर च मल्लिं, वदे मुणिसुच्चय नमि-  
जिण च ॥ वदामि रिद्धिनेमिं, पास तह उदभाण च ॥४॥  
एण मए अभियुआ, निहुयरयमला पहीणजरमरण । चउ-  
वीस पि जिणपरा, तित्थपरा मे पमीयतु ॥५॥ फित्थिय-  
वदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गो-  
हिलाभ, समाहियरमुत्तम दिंतु ॥६॥ चदेसु निम्मलयरा,  
आइच्चेसु अहिय पयामपरा । मागरवरगभीरा, मिद्धा मिद्धि  
मम दिमतु ॥७॥

इच्छामि खमासमणो वंदितुं जावणिज्जाए निर्माहि-  
आए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् !  
थंडिल पडिलेहुँ ? "इच्छं"

ऐसा कहकर नीचे लिखे अनुसार चौबीस मंडले करें ।

ये मंडल रात्रि मे बड़ी नीति लघुनीति ( पाखाना, पेशाव )  
वगैरा परठवने लायक जगह देखने ( प्रति लेखन करने ) के लिये हैं,

- १ आघाडे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहिआसे ।
- २ आवाडे आमन्ने पासवणे अणहिआसे ।
- ३ आघाडे मज्जे उच्चारे पासवणे अणहेआसे ।
- ४ आघाडे मज्जे पासवणे अणहिआसे ।
- ५ आघाडे दूरे उच्चारे पासवणे अणहिआसे ।
- ६ आघाडे दूरे पासवणे अणहिआसे ।

संधारा के पास की जगह इस माफिक छः मंडल करना:—

- १ आघाडे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहिआसे ।
- २ आघाडे आसन्ने पासवणे अहियासे ।
- ३ आवाडे मज्जे उच्चारे पासवणे अहियासे ।
- ४ आघाडे मज्जे पासवणे अहिआसे ।
- ५ आघाडे दूरे उच्चारे पासवणे अहिआसे ।
- ६ आघाडे दूरे पासवणे अहिआसे ।

उपासरे के वारने के अन्दर की तरफ इस माफिक छः मंडल करना:—

- १ अणाघाडे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहिआसे ।
- २ अणाघाडे आसन्ने पासवणे अणहिआसे ।

- ३ अणाघाडे मज्जे उच्चारें पामरणे अणहियासे ।
- ४ अणाघाडे मज्जे पासरणे अणहियासे ।
- ५ अणाघाडे दूरे उच्चारें पासरणे अणहियासे ।
- ६ अणाघाडे दूरे पामरणे अणहियासे ।

उपाश्रय के वारने के बाहर नजदीक रहकर छ मडल करना —

- १ अणाघाडे आमने उच्चारें पासरणे अहियासे ।
- २ अणाघाडे आसने पामरणे अहियासे ।
- ३ अणाघाडे मज्जे उच्चारें पासरणे अहियासे ।
- ४ अणाघाडे मज्जे पामरणे अहियासे ।
- ५ अणाघाडे दूरे उच्चारें पासरणे अहियासे ।
- ६ अणाघाडे दूरे पासरणे अहियासे ।

उपाश्रय मे सौ हाथ के अन्दाज दूर रहकर छ मडल करना —

इन मडलों वाली जगह पहले से ही देव रखनी और मडल स्थापनाजी के पास रहकर बोलते वक्त उन उन जगह पर दृष्टी का उपयोग (ध्यान) रखना ।

२४ मडल करने के बाद इरियावहि पढिक्कम कर चैत्यचन्दन के साथ देवसी या पात्तिकादि (पञ्चगौरी) प्रतिव्रमण करे ।

सथारा पोरिसी पढाने की विधि

यदि रात्रि-बौपध हो तो पढिक्कमण करने के बाद सथारा पोरिसी के समय तक स्वाध्याय, ध्यान, धर्म-वर्चा बगैरह करे । पीछे



इच्छामि खमाममणो वंदिउं जावणिज्जाए निमीहि-  
आए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् !  
बहुपडिपुएणा पोरिसी ? तइत्ति;

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निमीहि-  
आए मत्थएण वंदामि ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इरियावहियं पडिक्क-  
मामि ! इच्छं इच्छामि पडिक्कमिउं, इरियावहियाए, विराह-  
णाए, गमणागमणे, पाणक्कमणे, वीयक्कमणे, हरियक्कमणे,  
ओसा उतिंग-पणग-दग-मट्टी-मक्कडासंताणा संकमणे, जे  
मे जीवा विराहिया एगिंदिया वेइंदिया, तेइंदिया, चउरिं-  
दिया, पंचिंदिया, अभिहया वत्तिया, लेसिया, संघाइया,  
संघट्टिया, परियाविया, किल्लामिया, उदविया, ठाणाओठाणं  
संक्रामिया, जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं विसोहिकरणेणं,  
विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्मणं निग्घायणट्टाए, ठामि  
काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं,  
जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए पित्तमुच्छ्राए,  
सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं  
दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ  
हुज्ज मे काउस्स अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्का-

रेण न पारेमि ताव काय ठाणेणं मोणेण भाणेणं अप्पाण  
वोसिरामि ।

(यहां एक लोगस्स का या चार नक्कारे का काउत्सग्ग करना  
पीछे प्रगट लोगस्स कहना, वह नीचे लिखे अनुसार)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतिथ्यरे जिणे । अरिहंते  
कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वदे,  
सभमभिमणंदणं च सुमइ च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च  
चंदप्पहं वदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदत, सीअल-सिज्जसं  
वासुपुज्जं च । पिमलमणतं च जिण, धम्म संतिं च  
वंदामि ॥३॥ कुंधु अरं च मल्लि, वंदे मुणिसुव्वयं नमि-  
जिण च ॥ वदामि रिड्डनेमि, पास तह वद्वमाणं च ॥४॥  
एवं मए अभियुआ, तिहुयरयमला पहीणजरमरणा । चउ-  
वीसं पि जिणगरा, तिथ्यरा मे पसीयतु ॥५॥ कित्तिय-  
वदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गो-  
हिलाभ, समाहिवरसुत्तम दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा,  
आडच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धि  
मम दिमतु ॥७॥

। इच्छामि एमामणो वंदित जाणिज्जाए निसीहि-  
आए मत्थएण वदामि ॥ इच्छाकारेण मदिसह भगवन् !  
बहुपडिपुएणा पोरिसी, राडयसथारए ठामि ? “इच्छं”

ये कहकर चउक्साय का चैत्यवन्दन करें—

चउकसायपडिमल्लुल्लूरणु, दृज्जयमयणवाणमुसु-  
 मूरणु । सरसपिअंगुवन्नु गयगामिउ, जयउ पासु भुवण-  
 त्तयसामिउ ॥१॥ जसु तणुकंतिकडप्प सिणिद्धउ, सोहइ  
 फणिमणिकिरणा लिद्धउ, नं नवजलहरतडिल्लयलंछिउ, सो  
 जिणु पासु पयच्छउ वंछिउ ॥२॥

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं ॥ १ ॥ आङ्गराणं,  
 तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाणं ॥२॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं,  
 पुरिसवरपुंडरीआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं ॥३॥ लोगुत्तमाणं,  
 लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअग-  
 राणं ॥ ४ ॥ अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं,  
 सरणदयाणं, बोहिदयाणं ॥५॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसिआणं,  
 धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्खवट्ठीणं  
 ॥६॥ अप्पडिहयवरणाणदंसणधगाणं; विअट्ठुत्तमाणं ॥७॥  
 जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोह्याणं,  
 मुत्ताणं मोअगाणं ॥८॥ सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं, सिवमय-  
 लमरुअमणंतमक्खयमव्वावाहमपुणारावित्ति, सिद्धिगइनाम-  
 धेयं, ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअभयाणं ॥९॥  
 जे अ अइआ सिद्धा, जे अ भविस्संतिणाणए काले ।  
 संपइअ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥१०॥

जावंति चेइआइं, उड्ढेअ अहे अ तिरिअ लोए अ ।  
 सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं ॥१॥

इच्छामि एवाममखो रदिउं जारणिज्जाए निमीहि-  
आए मत्थण्ण उदामि ॥

जानंत केवि माह, भरहेरवय महाविदेहे अ । सन्वेमिं  
तेमिं पण्यो, विविहेण विदव विरयाणं ॥१॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ॥

उरसगडरं पामं, पामं उदामि रुम्मघणमुषं । विसहर-  
पिमनिन्नाम, भगलरुत्ताण-आत्राम ॥१॥ विमहर कुलिंगमत,  
रुंटे धारुंठ जो मया मणुयो । तस्म गठरोगमारी, दुद्धजरा  
वति उरगात्र ॥२॥ चिट्टुउ दूरं मतो, तुज्ज पणामो वि  
बहुफलो होइ । नगनिगिण्णु वि जीमा, पावति न दुक्खदोगचं  
॥३॥ तुह मम्मत्ते लद्धे, चिंतामणिकरूपपापरन्महिण ।  
पारति अरिग्घेण, जीस अयगमर टाय ॥४॥ इय संघुयो  
मदायम, भनिम्मगनिन्मरेण विथण्ण । ना देव दिज्जरोदिं,  
मवे मवे पामनिण्णचट ॥५॥

( अथ श्रोतों काथ जोडकर जय वीरपय कहना )

अथ वीरपय । जगगुरु । होउ ममं तुह पमारयो  
मपरं । मरनिवेयो मग्गाणुमाग्घिआ इद्धरुलमिद्धि ॥१॥  
लोगरिद्धिवाग्घी, शुभ्रग्गपूआ पण्यरुग्ग च । मुहगुरुनागो  
नयपरुग्गेरगा आमयमवहा ॥२॥ राग्गिज्ज उड वि  
नियण्ण पघणं पीअराय तुह ममण । तड वि मम इज्ज  
सेमा, मवे मवे तुम्ह चलगाण ॥३॥ दुक्खाम्भो रुम्मगयो,

समाहिमरणं च बोहिलाभो अ । संपञ्जउ महएअं, तुहनाह  
पणाम करणोणं ॥४॥ सर्वमंगलमंगल्यं, सर्वकल्याणकारणम् ।  
प्रधानं सर्वधर्माणां जैनं जयति-शासनम् ॥५॥

इच्छामि खमासमणो वंदितुं जावणिज्जाए निसीहिआए  
मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिमह भगवन् ! राइय-  
संधारा सूत्र पढने के निमित्त मुहपत्ति पडिलेहुँ ? “इच्छं”  
ऐसा कहकर मुहपत्ति पडिलेहण कर संधारा पोरिसि का पाठ पढे ।

निसीहि, निसीहि, निसीहि, नमो खमासमणायं गोय-  
माईणं महामुणीणं ।

नमो अरिहंतायं । नमो सिद्धायं । नमो आयरियायं ।  
नमो उवज्झायायं । नमो लोए सव्वसाहूयं । एसो पंच नमु-  
कारो । सव्वपावप्पणासणो । मंगलायं च सव्वेसिं पढमं-  
हवह मंगलं ॥१॥

करेमि भंते ! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चखामि । जाव  
पोसहं पञ्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं मणोणं वायाए  
काएणं न करेमि न कारवेमि तस्स भंते ! पडिकमामि  
निंदामि गरिहामि अप्पायं वोसिरामि ॥

( अनुक्रम से ये तीनों पाठ तीन दफे बोलना । )

अणुजाणह जिट्ठिज्जा !

अणुजाणह परमगुरु ! गुरुगुणरयणेहिं मंडियसरीरा  
बहुपडिपुन्ना पोरिसि, राइयसंधारए ठामि ॥ १ ॥

अणुजाणह सवत्, ग्राह्यदाणेण वामपासेण ।  
 कुक्षुटिपायपमारण, अतरंत पमज्जए भूमिं ॥ २ ॥  
 मफोडय मंडामा, उव्वट्टंते अ कायपडिलेहा ।  
 द-पाटउपयोग ऊमामनिरुभणालोए ॥ ३ ॥  
 जह मे हुज्ज पमाओ, इमम्म देइस्सिमाड रयणीए ।  
 आहारमुग्रहिदेह, सब्ब तिग्गिहेण बोमिरिय ॥ ४ ॥

चत्तारि मगल—अरिहता मगल, सिद्धा मगलं,  
 माहमंगल, केरलीपन्नतो धम्मो मगलं ॥ ५ ॥

चत्तारि लोगुत्तमा—अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा,  
 माह लोगुत्तमा, केरलीपन्नतो धम्मो लोगुत्तमो ॥ ६ ॥

चत्तारि मरण परज्जामि—अरिहते मरण परज्जामि,  
 सिद्धे मरण परज्जामि, माह मरणं परज्जामि, केरलीपन्नत्त  
 धम्मं मरण परज्जामि ॥ ७ ॥

पाणाट्ठायमलिय, चोरिण मेहुणं दण्डिणमुच्चं ।

कोट माण माय, लोहं पिज्ज तद्दा दोम ॥ ८ ॥

फन्नहं, अ-मसराण, पेणुअ रइ-अरइ-ममाउत्त ।

परपग्गिवाय माया-मोमं मिन्द्रत्तमज्ज च ॥ ९ ॥

धोणिरमु इमाः सुस्सपमग्गमंमग्गविग्गभूयाहं ।

दुग्गाइनिचधग्गां, अट्टाग्ग पापटाग्गाः ॥१०॥

एगोअ नत्थि मे रोइ, नाहमन्नस्य कम्मइ ।

एरं अदीकमणसो, अप्पाणमणुनागइ ॥११॥

एगो मे सासओ अप्पा, नाणदंसणसंजुओ ।  
 सेसा मे वाहिरा भावा, मच्चे संजोगलक्खणा ॥१२॥  
 संजोगमूला जीवेण, पत्ता दुक्खपरंपरो ।  
 तम्हा संजोगसंबंधं, सव्वं तिविहेण वोसिरिअं ॥१३॥  
 अरिहंतो मम देवो, जावज्जीवं सुसाहुणो गुरुणो ।  
 जिनपन्नत्तं तत्तं, इअ सम्मत्तं मए गहिअं ॥१४॥

( यह १४ वीं गाथा तीन बार कहे, पीछे सात नवकार गुण कर नीचे की तीन गाथा कहे )

खमिअ खमाविअ मइ खमह, सव्वह जीवणिकाय ।  
 सिद्धह साख आलोयणह, मुज्झह वइर न भाव ॥१५॥  
 सव्वे जीवा कम्मवस, चउदहराज भमंत ।  
 ते मे सव्व खमाविआ, मुज्झवि तेह खमंत ॥१६॥  
 जं जं मणेण वद्धं, जं जं वाएण भासिअं पावं ।  
 जं जं कायेण कयं, तस्स मिच्छामि दुक्खडं ॥१७॥इति॥

रात्रि को पोरिसी पढाने के बाद जब तक निद्रा न आवे तब तक स्वाध्याय ध्यान करे, संथारा दूसरे श्रावक के संथारे से कम से कम एक बेंत छेटी (एक बिलात दूर) विछाना । बाद मे रात्रि के आखरी प्रहर में उठकर राई प्रतिक्रमण करना और सुबह स्थापनाचार्य जी का पडिलेहण और इरियावहि करने के बाद वस्त्र आदि का पडिलेहण करना उसकी विधि इसी पुस्तक के पृष्ठ १५ की ४ थी पंक्ति से आरम्भ होकर पृष्ठ २१ की १३ वीं पंक्ति तक दिया है उसके अनुसार करें । बाद देववन्दन, सज्जाय

करें वह पु त्र मे आगे दिया हुआ है । त्वेव दर्शन, गुण वदन  
करके मागे हुने डडामण, कु डी, पानी चगौरा गृहस्थ को वापिस  
सभलवा देना पीछे आठ पहर का तथा रात्रि का पौषध पारना ।

आठ पहर के तथा रात्रि के पौषध पारने की विधि ।

इन्द्रामि समाममणो वंदितं जाग्रणिज्जाए निमीहि-  
आए मत्यएण उदामि ॥

इच्छाकारेण सदिमह भगवन् ! इरियाग्रहियं पडिक-  
मामि ! इच्छं इन्द्रामि पडिकमिऊ, इरियाग्रहियाए, निराह-  
णाए, गमणागमणे, पाणकमणे, वीयकमणे, हरियकमणे,  
ओसा उतिंग-पणग दग-मट्टी-मकडासताणा मरुमणे, जे  
मे जीना निराहिया एगिंदिया वेदिया, तेदिया, चउरिं-  
दिया, पचिंदिया, अभिहया वत्तिया, लेसिया, संघाइया,  
मधट्टिया, परियाग्रिया, क्लामिया, उदविया, ठाणाओठाण  
मरुमिया, जीग्रियाओ उग्रिया तस्स मिच्छामि दुक्कड ।

तस्म उत्तरीकरणेण, पापच्छित्तकरणेण निमोहिकरणेण,  
निमल्लीकरणेण, पावाण कम्मण निग्घायणट्टाए, ठामि  
काउस्सग्गं ॥

अन्नत्य उससिएण, नीसमिएण, खासिएण, छीएण,  
जंभाइएण, उड्डुएण, वायनिसग्गेण, भमलिए पित्तमुच्छाए,  
सुद्धुमेहिं अगमचालेहिं, सुद्धुमेहिं खेलसचालेहिं, सुद्धुमेहिं  
दिट्ठिसचालेहिं, एणमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अपिराहियो



हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्का-  
रेणं न पारेमि ताव कायं टाणेणं मोणेणं भाणेणं अप्पाणं  
वोसिरामि ।

(यहां एक लोगस्स का या चार नवकार का काउस्सग्ग करना  
पीछे प्रगट लोगस्स कहना, वह नीचे लिखे अनुसार)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते  
कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वंदे,  
संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च  
चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस  
वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च  
वंदामि ॥३॥ कुंधुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमि-  
जिणं च ॥ वंदामि रिद्धनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥  
एवं मए अभिधुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा । चउ-  
वीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्ति-  
य-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गवो-  
हिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा,  
आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं  
मम दिसंतु ॥७॥

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-  
आए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् !  
मुहपत्ति पडिल्ले ?

( ऐसे कहकर मुहपत्ति पडिलेहना-पीछे खमासमण देना- )

इच्छामि समाममणो वंदिउ जाणणिज्जाए निसीहि-  
आए मत्यएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण सदिसह भगवन् !  
पोसह पारेमि ? 'यथाशक्ति'

इच्छामि समासमणो वंदिउं जाणणिज्जाए निसीहि-  
आए मत्यएण वदामि ? इच्छाकारेण सदिसह भगवन् !  
पोमह पारिय 'तद्वत्ति'

( कहकर दाहिने हाथको चरवले पर रखकर मस्तक भुकाकर  
एक नमस्कार मात्र बोल फिर "सागर चन्दो" की पोषध पारने की  
गाथा कहे —

नमो अरिहंताण । नमो मित्राण । नमो आयरियाण ।  
नमो उवञ्जायाण । नमो लोए सत्तसाहूण । एमो पंच  
नमुषारो । मन्व पाणप्पणासणो । मंगलाण च मज्जेसिं ।  
पढम हउड मगल ॥

"सागर चन्दो कामो, चन्दवडिसो मुदमणो धन्नो ।

जेमि पोसह पडिमा, अरुडिआ जीणियते वि ॥१॥

धन्ना सलाहणिज्जा, सुलसा आणुड कामदेवा य ।

जाम पससड भयण, दद्वययत्त महावीरो ॥२॥

पोमह विधि मे निया शिधि मे पारा विधि परते जो कोडं  
अविधि हुई हो वह मय मन यचन पाया करणं  
मिच्छामि दुषडं ।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-  
आए मत्थएण वंदामि ? इच्छाकारेण संदिसह भगवन् !  
मुहपत्ति पडिलेहुँ ?

( ऐसे कहकर मुहपत्ति पडिलेहना—पीछे खमासमण देना— )

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-  
आए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् !  
सामायित्रं पारेमि ? 'यथाशक्ति'

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहि-  
आए मत्थए वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिमह भगवन् !  
सामायित्रं पारित्रं 'तहत्ति'

( ऐसे कहकर दाहिने हाथ को चरवले पर रखकर मस्तक  
झुकाकर एक नवकार मंत्र पढकर 'सामायित्रवयजुत्तो'  
सूत्र पढे )—

नमो अरिहंताणं । नमो सिद्धाणं । नमो आयरियाणं ।  
नमो उवज्झायाणं । नमो लोए सव्व साहूणं । एसो पंच  
नमुकारो । सव्व पावप्पणामणो । मंगलाणं च सव्वेसिं ।  
पढमं हवइ मंगलं ॥

सामायित्रवयजुत्तो, जाव मणे होई नियमसंजुत्तो ।  
छिन्नइ असुहं कम्मं, सामाइअजत्तिआ वारा ॥१॥ सामाइ-  
अंमि उ कए, समणो इव सावओ हवइ जम्हा । एएण  
कारेणेणं बहुसो सामाइयं कुज्जा ॥२॥

मैने सामयिक विधिसे लिया, विधिसे पूर्ण किया, विधिमे जो कोई अपविधि हुई हो तो मिच्छामि दुकड्ड ।

दस मनके, दस वचनके, बारह ऋया के ये कुल उत्तीस दोषोंमे से कोई दोष लगा हो तो मिच्छामि दुकड्ड ।

दिन के चार पहर का पौषध पारने की विधि ।

देवसी या पाचिकादि (पक्खी वगैरा) प्रतिव्रमण करने के बाद पौषध पारने के पहिले मागे हुए डडासण कु डी, पानी वगैरा गृहस्थ को वापिस सभलवा देना पीछे समासमण देकर इरियावहि करके चउक्साय चैत्यवन्दन करे, उसकी विधि इमी पुस्तक के पृष्ठ ५८ की ४ थी पक्ति से आरम्भ होकर पृष्ठ ६० की ३ री पक्ति तक ( जैन जयति शासनम् ॥५॥ तक ) दिया है उसके अनुसार करें । बाद में समासमण देकर पौषध पारने की मुहपत्ति पडिलेहन करें उसकी विधि इस पुस्तक के पृष्ठ ६६ की १६ थी पक्ति से आरम्भ होकर पृष्ठ ६६ की ४ थी पक्ति तक दिया है उसके अनुसार पाँरें ।

❀ इति पौषध विधि समाप्त ❀





❀ श्री वीतरागाय नमः ❀

## ❀ त्रिकाल-देववन्दन विधि ❀

( अथ देववन्दन )

देववन्दन करने वाले श्रावक श्राविका पहिले शुद्ध वस्त्र पहन कर चौकी (वाजोठ) आदि उच्च स्थान पर पुस्तक जपमाला (नवकारवाली) आदि रखकर, जमीन पूंजकर, आसन विछाकर, चर-वला और मुहपत्ति लेकर बैठे। बैठ के बाँये हाथ में मुहपत्ति मुखके आगे रखकर दाहिने हाथ को स्थापन किये हुए पुस्तक आदि की स्थापना के संमुख करके नवकारमंत्र पढ़ें।

नमो अरिहंताणं । नमो सिद्धाणं । नमो आयरियाणं ।  
नमो उवज्झायाणं । नमो लोए सव्वसाहूणं । एसो पंच  
नमुक्कारो । सव्वपावप्पणासणो । मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं  
हवइ मंगलं ॥१॥

पंचिंदियसंवरणो, तह नवविहवंभचेरगुत्तिधरो । चउ-  
विहकसायमुक्को, इअ अट्टारस गुणेहिं संजुतो ॥१॥ पंच मह-

व्ययजुत्तो पंचनिहायारपालखसमत्थो । पंचसमिथ्रो तिगुत्तो,  
छत्तीसगुणो गुरु मज्झ ॥२॥

(ऐसे पचिदिय कहे, यन्नि प्रथम से उस स्थान पर आचार्य प्रसुग्ग की स्थापना की हुई हो तो वहा पचिदिय नहीं कहना। पीछे)

इच्छामि समासमणो वदिउ जाणणिज्जाए निसीहि-  
आए मत्थएण उदामि ॥

इच्छाकारेण सदिसह भगवन् ! इरियान्हियं पडिक्क-  
मामि ! इच्छं इच्छामि पडिक्कमिऊ, इरियान्हियाए, निराह-  
णाए, गमणागमणे, पाणअमणे, वीयकमणे, हरियकमणे,  
ओसा उत्तिग-पणग दग-मट्टी-मवडामताणा संरुमणे, जे  
मे जीना निराहिया एगिदिया वेडदिया, तेडदिया, चउरिं-  
दिया, पचिदिया, अभिहया रत्तिया, लेसिया, सघाडया,  
सघट्टिया, पग्गियाणिया, किलामिया, उदणिया, ठाणाओठाण  
सकामिया, जीणियाओ उरगेणिया तस्म मिच्छामि दुक्खड ।

तस्स उत्तगीरुणेरण, पायच्छित्तरुणेरण विसोहिरुणेरणं,  
विसल्लीरुणेरण, पावाण कम्मणं निग्वायणट्ठाए, ठामि  
क्काउस्मग्ग ॥

अन्नत्य उममिएण, नीमसिएण, एामिएण, छीएण,  
जंमाडएण, उट्टुएण, वायनिमग्गेण, भमलिए पित्तमुच्छ्राए,  
मुट्टुमेहिं अगमचालेहिं, मुट्टुमेहिं खेलसंचालेहिं, मुट्टुमेहिं  
दिट्ठिमंचालेहिं, एउमाडएहिं आगारेहिं अमग्गो अनिराहियो

हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्का-  
रेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं भाणेणं अप्पाणं  
वोसिरामि ।

(यहां एक लोगस्स का या चार नवकार का काउस्सग्ग करना  
पीछे प्रगट लोगस्स कहना, वह नीचे लिखे अनुसार)

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतिथ्यरे जिणे । अरिहंते  
कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वंदे,  
संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च  
चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस  
वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च  
वंदामि ॥३॥ कुंधुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमि-  
जिणं च ॥ वंदामि रिड्डनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥  
एवं मए अभिधुआ, विहुययमला पहीणजरमरणा । चउ-  
वीसं पि जिणवरा, तिथ्यरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्ति-  
वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गवो-  
हिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा,  
आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं  
मम दिसंतु ॥७॥

( अब उत्तरासन डालकर खमासण कर चैत्यवंदन करें )

इच्छामि खमासमणो वंदितुं जावणिज्जाए निसीहि-  
आए मत्थएण वंदामि ॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् !  
चैत्यवंदन करूं ? "इच्छं"

ॐ चैत्यवदन ॐ

श्री शत्रुञ्जय मिद्वक्षेत्र, दीठे दुर्गति वारे ।

भाज धरी ने जे चढे, तेने भज पार उतारे ॥१॥

अनत मिद्वनो एह ठाम, मरुल तीर्थनो राय ।

पूरु नगणु' श्रुपमदेन, ज्या ठविद्या प्रभुपाय ॥२॥

सुरज कु ड सोहामणे, वरलजल्यभिराम ।

नाभिराय ब्रुल मडणो, जिनवर करु प्रणाम ॥३॥

ज किंचि नामवित्त्य, मग्गे पायालि भाणुसे लोए ।

वाइंजिणविवाइ, ताड मज्जाइ वदामि ॥१॥

नमुत्तृखं अरिहताण भगवंताण ॥ १ ॥ आइगराण,

विअपराण, मयमशुद्धाण ॥२॥ पुग्गिमुत्तमाण, पुग्गिमभीहाण,

पुग्गिमवरपुटरीआण, पुग्गिमवरगघहत्थीण ॥३॥ लोगुत्तमाण,

लोगनाइाणं, लोगहिआण, लोगपईआण, लोगपञ्जोअग-

गण ॥ ४ ॥ अमपटयाण, चकमुटयाण, मग्गदयाण,

मग्गदयाण, बोहिदयाण ॥५॥ घम्मदयाण, घम्मदेमिआण,

घम्मनापगाण, घम्ममारहीण, घम्मवरचाउरंतचयइहीण

॥६॥ अप्पटिहयवग्गनागदमणघराण, विअइइउमाण ॥७॥

जिग्गाण जाण्याणं, विआण ताग्याण, पुट्टाण बोहयाणं,

मुत्ताणं मोअगाण ॥८॥ मज्जन्तूग मज्जदग्गिमीण, मियमप-

लमग्गमरात्तमस्सयम' साराइवपुग्गगारिच्छि, मिद्विगइनाम-

धेय, टाण मपणाण, नमो जिगाण, निअमयाण ॥९॥



दिद्विसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ  
हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्का-  
रेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं भाणेणं अप्पाणं  
वोसिरामि ।

( एक नवकार का काउस्सग्ग कर “नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपा-  
ध्याय सर्वसाधुभ्यः” कहकर थुइ कहना—

कल्लाणकंदं पढमं जिण्णिदं, संतिं तथो नेमिजिणं मुण्णिदं ।  
पासं पयासं सुगुणिकठाणं, भत्तीइ वंदे सिरिचद्धमाणं ॥१॥

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहंते  
कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ॥१॥ उसभमजिअं च वंदे,  
संभवमभिणंदणं च सुमइं च । पउमप्पहं सुपासं, जिणं च  
चंदप्पहं वंदे ॥२॥ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल-सिज्जंस  
वासुपुज्जं च । विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च  
वंदामि ॥३॥ कुंधुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमि-  
जिणं च ॥ वंदामि रिद्धनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥  
एवं मए अभिधुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा । चउ-  
वीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥ कित्थिय-  
वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा । आरुग्गवो-  
हिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥ चंदेसु निम्मलयरा,  
आइच्चेसु अहियं पयासयरा । सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं  
मम दिसंतु ॥७॥

सव्वलोए अरिहंतचेडआणं, ऊरेमि काउस्सग्गं वदण-  
वत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्खरवत्तिआए, सम्माणवत्ति-  
आए, बोहिलाभरत्तिआए, निहवसग्गरत्तिआए, सद्दाए,  
मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, चड्ढमाणीए, ठामि  
काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊमसिएणं, नीससिएणं, रासिएणा, छीएणा,  
जमाइएणा, उड्डुएणा, वायनिसग्गेणा, भमलिए, पित्तमुच्छ्राए,  
मुहुमेहिं अंगसचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं  
दिद्धिसचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहियो  
हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाय अरिहताणा भग्गताणा, नमु-  
क्कारेणा न पारेमि, तत्र काय ठाणेणा मोणेणा भाणेणा  
अप्पाणा वोसिरामि ॥

( एक नवकार का काउस्सग्ग करके प्रकट कल्लाणग्ग की  
दूसरी थुड नीचे लिखे अनुसार कहना )

अपारससारसमुदपार, पत्ता सिम दिंतु मुड्वसार ।  
सव्वे जिणिंदा सुग्गिंदग्गंदा, कल्लाणग्गणीण विसालग्गंदा ॥२॥

पुक्खरवरदीग्गडे, धायडसडे अ जजुदीवे अ । भरहेरय-  
ग्गिदेहे, धम्मग्गारे नमसामि ॥१॥ तम विमिर-पडल-ग्गिद्वं  
सणस्म नुरग्गणनरिंदमहियस्म । मीमाग्गस्सग्गं, पण्णोडिअ  
मोहजालस्स ॥२॥ जाईजरामग्गमोगपणामणस्म, कल्लाण-  
पुक्खल-ग्गिमाल-सुहाग्गस्म । को देग्गदाणग्गनरिदग्गणचियस्म,

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं । आङ्गराणं तित्थ-  
 पराणं सयंसंबुद्धाणं । पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिस-वर  
 पुंडरीआणं पुरिसवर-गंधहत्थीणं । लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं  
 लोगहिआणं लोगपईवाणं लोगपज्जोअगराणं अभयदयाणं  
 चक्खुदयाणं मग्गदयाणं सरणदयाणं बोहिदयाणं धम्म-  
 दयाणं धम्मदेसयाणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवर-  
 चाउरंत चक्खट्ठीणं अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं विअट्ठ-  
 उमाणं जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं  
 बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं,  
 सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वावाहमपुणरावित्ति, सिद्धिगइ  
 नामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं जिअभयाणं ।  
 जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले । संपइअ  
 वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥

अरिहंतचेइआणं करेमि काउस्सगं, वंदणवत्तिआए,  
 पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए सम्माणवत्तिआए बोहि-  
 लाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए, सद्धाए, मेहाए,  
 धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि  
 काउस्सगं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं,  
 जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए पित्तमुच्छ्राए,  
 सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं

दिद्विसंचालेहि, एतमाडएहिं-आगारेहिं अभग्गो अपिराहियो  
हुज्ज मे काउस्सग्गो । जान अरिहताणं भग्गताण, नमुक्का-  
रेण न पारेमि ताव कायं ठाणेण मोणेणं भाणेण अप्पाणं  
गेमिरामि ।

( एक नववार का काउस्सग्ग कर “नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपा-  
ध्याय सर्वमाधुभ्य ” कहकर थुड कहना—

शंखेश्वर पासजी पूनीए, नरभन्नो लाहो लीजीए,  
मनप्रच्छित पूरण सुरतरु, जय वामासुत अलवेमरु ॥१॥

लोगस्म उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे । अरिहते  
क्वित्तइस्स, चउवीस पि केवली ॥१॥ उमभमजिय च वदे,  
संभवमभिणंदण च सुमड च । पउमप्पह सुपास, जिणं च  
चदप्पहं वदे ॥२॥ सुनिहिं च पुप्फटंत, मीअल-सिज्जस  
वासुपुज्जं च । निमलमणत च जिण, वम्म सतिं च  
वदामि ॥३॥ कुंदु अर च मल्लि, वदे मुणिसुव्वय नमि-  
जिण च ॥ वदामि रिद्धनेमिं, पास तह वद्धमाण च ॥४॥  
एवं मए अभियुया, विहियरयमला पहीणजरमरणा । चउ-  
वीस पि जिणररा, तित्थयरा मे पसीयतु ॥५॥ क्वित्तिय-  
वटिय-महिया, जे ए लोगस्म उत्तमा सिद्धा । आरुग्गो-  
हिलाम, समाहिन्नमुत्तम दिंतु ॥६॥ चदेसु निम्मलयरा,  
आइचेसु अहिय पयासयरा । सागरवरगभीरा, मिद्धा मिद्धि  
मम दिमतु ॥७॥

सन्वलोए अरिहंतचेइआणं, करेमि काउस्सग्गं वंदण-  
वत्तिआए, पूअणवत्तिआए, सक्कारवत्तिआए, सम्माणवत्ति-  
आए, बोहिलाभवत्तिआए, निरुवसग्गवत्तिआए, सद्धाए,  
मेहाए, धिईए, धारणाए, अणुप्पेहाए, वड्ढमाणीए, ठामि  
काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं,  
जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए पित्तमुच्छ्राए,  
सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं  
दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ  
हुज्ज मे काउस्सग्गो । जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमुक्का-  
रेणं न पारेमि ताव कायं ठाणेणं मोणेणं भाणेणं अप्पाणं  
वोसिरामि ।

( एक नवकार का काउस्सग्ग करके दूसरी थुइ नीचे लिखे  
अनुसार कहना )

दोय राता जिनवर अति भला, दोय धोला जिनवर गुणनीला;  
दोय नीला दोय शामल कड्या, सोले जिन कंचन वर्ण लड्या ॥२॥

पुक्खरवरदीवड्ढे, धायइसंडे अ जंवुदीवे अ । भरहेरवय-  
विदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ॥१॥ तम-तिमिर-पडल-विट्ठं  
सणस्स सुरगणनरिंदमहियस्स । सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडिअ  
मोहजालस्स ॥२॥ जाईजरामरणसोगपणासणस्स, कल्लाण-  
पुक्खल-विसाल-सुहावहस्स । को देवदाणवनरिंदगणच्चियस्स,

धम्मम्म मारमुवल्लम्भं कुरे पमाय ॥३॥ मिद्वे भो ! पयत्रो  
 णमो जिणमए नदी मया संजमे, देवंनागमुवन्नकिन्नरगणस्म-  
 च्चभूअभापच्चिए । लोगो जत्थ पडड्डियो जगमिण तेलुक्कमचा-  
 सुर, धम्मो वड्डउ मासत्रो पिजयत्रो धम्म्युत्तर उड्डउ ॥४॥  
 सुअम्म भगवत्रो कुरेमि काउस्सग्ग । वंदणवत्तिआए, पृअण-  
 वत्तिआए, सकारवत्तिआए, सम्माणवत्तिआए, मोहिलाभव-  
 त्तिआए, निरुपसग्गवत्तिआए । मद्दाए मेहाए धिडण  
 धारणाए अणुप्पेदाए वड्डमाणीए ठामि काउस्सग्गं ।

अन्नत्थ ऊममिएण नीससिएणा, एसिएणा छीएणा,  
 जंभाइएणा, उट्टुएणा, वायनिसग्गेणा, भमलिए, पित्तमुन्छाए,  
 सुट्टुमेहिं अगमंचालेहिं, सुट्टुमेहिं, सेलमंचालेहिं, सुट्टुमेहिं  
 टिट्ठिमंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं, अमग्गो अपिराहियो  
 इज्ज मे काउस्सग्गो ॥ जाव अरिहंताए भगवताए नमु-  
 धारेण न पारेमि, ताव काय टोणेण मोणेण भाणेणं  
 अप्पाए वोमिरामि ॥

( एक नवकारका काउस्सग्ग तीसरी थुड कहना )

आगम ते जिनवर माखियो, गणधर ते हँडे राखियो,  
 तेनो रम जेणे चाखियो, ते हूवो गिरमुत्त माखियो ॥३॥

मिद्धाए उद्धाए, पासगयाए पपसगयाए । लोअग्ग-  
 मुत्तगयाए नमो मया मअमिद्धाए ॥१॥ जो देवाण रि

देवो, जं देवा पंजली नमंसंति । तं देवदेवमहिअं, मिरसा  
 वंदे महावीरं ॥२॥ इको वि नमुकारो, जिणवरवसहस्स  
 वद्धमाणस्स । संसारसागराओ, तारेइ नरं व नारिं वा ॥३॥  
 उज्जितसेल्लसिहरे, दिक्खानाणं निमीहिआ जस्स । तं  
 धम्मचक्कवट्ठिं, अरिद्धनेमिं नमंसामि ॥४॥ चत्तारि अट्ठ दस  
 दो, य वंदिया जिणवरा चउव्वीसं । परमट्ठ निट्ठिअट्ठा,  
 सिद्धां सिद्धिं मम दिसंतु ॥५॥

वेयावच्चगराणं संतिगराणं सम्मदिट्ठिसमाहिगराणं  
 करोमि काउस्सग्गं ॥

अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं,  
 जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुच्छाए,  
 सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं सुहुमेहिं  
 दिट्ठिसंचालेहिं, एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ  
 हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं, नमु-  
 कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं भाणेणं  
 अप्पाणं वोसिरामि ॥

( एक नवकार का काउस्सग्ग पारकर “नमोऽर्हत्सिद्धाचार्यो-  
 पाध्याय सर्वसाधुभ्यः” कहकर चौथी थुइ कहना)

धरणीधरराय पद्मावती, प्रभु पार्श्व तणां गुण गावती;  
 सहु संघना संकट चूरती, नय विमलनां वंछित पूरती ॥४॥

नमुत्थुण अरिहंताणं भगवंताण ॥ १ ॥ आडगराणं,  
 तित्थयराणं, सयंसंबुद्धाण ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाण, पुरिससीहाणं,  
 पुरिसवरपुडरीआणं, पुरिसवरगवहत्थीण ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाणं,  
 लोगनाहाणं, लोगहिआण, लोगर्हवाण, लोगपज्जोअग-  
 राण ॥ ४ ॥ अभयदयाण, चक्खुदयाण, मग्गदयाण,  
 सरणदयाण, बोहिदयाणं ॥ ५ ॥ धम्मदयाण, वम्मटेसिआण,  
 धम्मनायगाण, धम्ममारहीण, धम्मपरचाउरंतचक्खवट्टीणं  
 ॥ ६ ॥ अप्पडिहयवरनाणटसणधरोण, त्रियट्टुल्लउमाण ॥ ७ ॥  
 जिणाण जाणयाण, तिन्नाण तारयाण, बुद्धाणं बोहयाण,  
 मुत्ताणं मोअगाण ॥ ८ ॥ मव्वन्नूण सव्वदरिसीण, सिअमय-  
 लमरुअमणतमस्सयमव्वाजाहमपुणरारिप्पि, सिअगिअनाम-  
 धेय, ठाण सपंताण, नमो जिणाण, जिअभयाण ॥ ९ ॥  
 जे अ अइआ सिद्धा, जे अ भप्पिस्सतिणागए काले ।  
 संपइअ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण उदामि ॥ १० ॥

जापंति चेइआडं, उड्ढेअअहे अ तिरिअ लोए अ ।  
 सव्वाड ताड उदे, इह सतो तत्थ सताडं ॥ १ ॥

इच्छामि एमाममणो उदिउ जाणणिज्जाए निसीहि-  
 आए मत्थएण वदामि ॥

जापत केपि साह, भरहेरवय महानिदेहे अ । सवेसि  
 तेमि पणओ, तिविहेण तिड ड पिरयाणं ॥ १ ॥

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वमाधुभ्य ॥



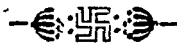
नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं । आङ्गराणं तित्थ-  
 यराणं सयं संबुद्धाणं । पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिस-वर  
 पुंडरीआणं पुरिसवर-गंधहत्थीणं । लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं  
 लोगहिआणं लोगपर्ईवाणं लोगपज्जोअगराणं अभयदयाणं  
 चक्खुदयाणं मग्गदयाणं सरणदयाणं बोहिदयाणं धम्म-  
 दयाणं धम्मदेसयाणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवर-  
 चाउरंत चक्खुद्धीणं अप्पडिहयवरणाणं दंसणंधराणं विअट्ठ-  
 उमाणं जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं  
 बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं,  
 सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वावाहमपुण्णरावित्ति, सिद्धिगइ  
 नामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं जिअमयाणं ।  
 जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविस्संति णागए काले । संपइअ  
 वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि ॥

( अब दोनों हाथ जोडकर जय वीअराय कहना )

जय वीअराय ! जगगुरु !, होउ ममं तुह पभावओ  
 भयवं ! भवनिव्वेओ मग्गाणुसारिआ इट्ठफलसिद्धि ॥१॥  
 लोगविरुद्धच्चाओ, गुरुजणपूआ परत्थकरणं च । सुहगुरुजोगो  
 तव्वयणसेवणा आभवमखंडा ॥२॥ वारिज्जइ जइ वि  
 निआणं वंधणं वीअराय तुह समए । तह वि मम हुज्ज  
 सेवा, भवे भवे तुम्ह चलणाणं ॥३॥ दुक्खखओ कम्मखओ,  
 समाहिमरणं च बोहिलाभो अ । संपज्जउ महएअं, तुहनाह



जिणपूआ जिणधुणणं, गुरुधुअ साहम्मिआण वच्छल्लं ।  
 ववहारस्स य सुद्धी, रहजत्ता तित्थजत्ता य ॥ ३ ॥  
 उवसम विवेग संवरं, भासासमिई छजीव करुणा य ।  
 धम्मिअज्जणसंसग्गो, करणदमो चरणपरिणामो ॥ ४ ॥  
 संघोवरि बहुमाणो, पुत्थयलिहणं पभावणा तित्थे ।  
 सड्ढाण किच्चमेअं, निच्चं सुगुरूवएसेणं ॥ ५ ॥ इति ॥



॥ श्री पर्युषण पर्व का चैत्यवन्दन ॥

पर्व पर्युषण गुणनीलो, नव कल्प विहार ।  
 चार मासांतर स्थिर रहे, एहीज अर्थ उदार ॥ १ ॥  
 आषाढ शुद्ध चौदश थकी, संवत्सरी पचास ।  
 मुनिवर दिन सीत्तेरमे, पडिकमतां चउमास ॥ २ ॥  
 श्रावक पण समता धरी, करे गुरुना बहुमान ।  
 कल्पसूत्र सुविहित मुखे, सांभले थइ एकतान ॥ ३ ॥  
 जिनवर चैत्य जुहारीये, गुरुभक्ति विशाल ।  
 प्राये अष्ट भवांतरे, वरीये शिव वरमाल ॥ ४ ॥  
 दर्पणथी निज रूपनो, जुए सुदृष्टि रूप ।  
 दर्पण अनुभव अर्पण, ज्ञान रमण मुनि भूप ॥ ५ ॥  
 आत्मस्वरूप विलोकतां, प्रगट्यो मित्र स्वभाव ।  
 राय उदायी खामणां, पर्व पर्युषण दाव ॥ ६ ॥  
 नव वखाण पूजी सुणो, शुक्ल चतुर्थी सीमा ।

पंचमी दिन वाचे सुणे, होय पिरोवी नीमा ॥ ७ ॥

ए नहीं परे पंचमी, सर्व समाणी चोथे ।

भयभीरु मुनि मानशे, भाव्यु अरिहा नाथे ॥ ८ ॥

श्रुत केवली वयणा सुणी, लही मानव अग्रतार ।

श्री शुभ वीरने शासने, पाम्या जय जयकार ॥ ९ ॥

॥ श्री वीश स्थानरु तपे चैत्यमन्दन ॥

पहले पद अरिहंत नमु, बीजे सर्व सिद्ध ।

बीजे प्रपचन मन धरो, आचारज सिद्ध ॥ १ ॥

नमो येराण पाचमे, पाठरु गुण छडे ।

नमो लोए सब्य साहूण, जे छे गुण गरिडे ॥ २ ॥

नमो नाणस्म आठमे, दर्शन पद घ्याओ ।

पिनय करो गुणवंतनो, चारित्र मन भाओ ॥ ३ ॥

नमो संभय धारिण तेरमे करियाण ।

नमो तपस्म चौदमे, गोयम नमो जिणाण ॥ ४ ॥

अचारित्र अनाण अमुग्रस्मने ए, नमो तित्थस्म जाणी ।

जिन उत्तम पद पजने, नमता होय सुख ग्राणी ॥ ५ ॥

॥ दूज तिथिरु चैत्यमन्दन ॥

दुविध धर्म जिणे उपदिश्यो, चौथा अभिनंदन ।

बीजे जन्म्या ते प्रभु, भय दुःख निरुदन ॥ १ ॥

१ स्थविर । २ उपाध्याय । ३ सयम । ४ ज्ञान । ५ श्रुतज्ञान,  
अथवा श्रुत-सिद्धात, जो ८५ आगम है ।

दुविध ध्यान तमे परिहरो, आदरो दोय ध्यान ।  
इम प्रकाश्युं सुमति जिने, ते चविया बीज दिन ॥ २ ॥  
दोय बंधन राग द्वेष, तेहने भवि तजीये ।  
मुज परे शीतल जिन कहे, बीज दिन शिव भजीये ॥ ३ ॥  
जीवाजीव पदार्थनुं, करो नाण सुजाण ।  
बीज दिने वासुपूज्य परे, लहो केवलज्ञान ॥ ४ ॥  
निश्चय ने व्यवहार दोय, एकांते न ग्रहीये ।  
अरजिन बीज दिने चवी, एम जन आगल कहीये ॥ ५ ॥  
वर्तमान चोवीशीए, एम जिन कल्याण ।  
बीज दिने केइ पामीया, प्रभु नाण निर्वाण ॥ ६ ॥  
एम अनंत चोवीशीए, हुआं बहु कल्याण ।  
जिन उत्तम पद पढने, नमतां होय सुख खाण ॥ ७ ॥

॥ पंचमी का चैत्यवन्दन ॥

त्रिगडे बेठा वीर जिन, भाखे भविजन आगे ।  
त्रिकरणशुं त्रिहुं लोक जन, निसुणो मन रांगे ॥ १ ॥  
आराधो भली भातसें, पांचम अजुआली ।  
ज्ञान आराधन कारणे, एहज तिथि निहाली ॥ २ ॥  
ज्ञान विना पशु सारिखा, जाणो एणे संसार ।  
ज्ञान आराधनथी लहे, शिवपद सुख श्रीकार ॥ ३ ॥  
ज्ञान रहित क्रिया कही, काम कुसुम उपमान ।  
लोकालोक प्रकाश कर, ज्ञान एक परधान ॥ ४ ॥

ज्ञानी श्वासोश्वासमा, करे कर्मनो छेह ।  
 पूर्ण कोडी वरसा लगे, अज्ञानी करे तेह ॥ ५ ॥  
 देश आराधक क्रिया रुही, सर्व आराधक ज्ञान ।  
 ज्ञान तणो महिमा घणो, अग पाचमे भगवान ॥ ६ ॥  
 पच माम लघु पचमी, जावाजीव उत्कृष्टी ।  
 पंच वरस पच मासनी, पंचमी करो शुभ दृष्टि ॥ ७ ॥  
 एकाग्रन ही पचनो ए, काउस्सगग लोगस्स केरो ।  
 उजमणु करो भावशुं, टालो भव फेरो ॥ ८ ॥  
 एणी परे पचमी आराधीए, आणी भाव अपार ।  
 वरदत्त गुणमंजरी परे, रंगविजय लहो सार ॥ ९ ॥  
 ॥ श्री अष्टमी चैत्यवन्दन ॥  
 माह शुदी आठम दिने, विजया सुत जायो ।  
 तेम फागण शुदि आठमे, समन चची आव्यो ॥ १ ॥  
 चैत्र वदिनी आठमे, जन्म्या ऋषभ जिनद ।  
 दीक्षा पण ए दिन लही, हुआ प्रथम मुनिचंद ॥ २ ॥  
 भाधन शुदि आठम दिने, आठ कर्म कर्या दूर ।  
 अभिनदन चौथा प्रभु, पाम्या मुख भरपूर ॥ ३ ॥  
 एहीज आठम उजली, जन्म्या सुमति जिनद ।  
 आठ जाति कलशे रुनी, नगराये सुर इद ॥ ४ ॥  
 जन्म्या जेठ वदि आठमे, मुनिसुत्रत स्वामी ।  
 नेम अपाड शुदि आठमे, अष्टमी गति पामी ॥ ५ ॥  
 आवरण वटनी आठमे, नमि जन्म्या जग भाण ।

तेम श्रावण शुदि आठमे, पासजीनुं निरवाण ॥ ६ ॥

भाद्रवा वदी आठमं दिने, चविया स्वामी सुपास ।

जिन उत्तम पद पवने, सेव्याथी शिववास ॥ ७ ॥

॥ श्री एकादशी का चैत्यवन्दन ॥

शासन नायक वीरजी, प्रभु केवल पायो ।

संघ चतुर्विध थापवा, महसेन वन आयो ॥ १ ॥

माधव सित एकादशी, सोमिल द्विज यज्ञ ।

इन्द्रभूति आदि मल्या, एकादश विज्ञ ॥ २ ॥

एकादशसो चउ गुणा, तेहनो परिवार ।

वेद अर्थ अवलो करे, मन अभिमान अपार ॥ ३ ॥

जीवादिक संशय हरी, एकादश गणधार ।

वीरे थाप्या वंदीये, जिनशासन जयकार ॥ ४ ॥

मल्लि जन्म अर मल्लि पास, वर चरण विलासी ।

ऋषभ अजित सुमति नमि, मल्लि घनघाती विनाशी ॥ ५ ॥

पद्मप्रभ शिव वास पास, भव-भवना तोडी ।

एकादशी दिन आपणी, ऋद्धि सधली जोडी ॥ ६ ॥

दश क्षेत्रे त्रिहुँ कालनां, त्रणसँ कल्याण ।

वरस अग्यार एकादशी, आराधो वर नाण ॥ ७ ॥

अगीयार अंग लखावीये, एकादश पाठां ।

पुंजणी ठवणी वींटणी, मपी कागल ने काठां ॥ ८ ॥

अगीयार अत्रत छांडवां ए, वहो पडिमा अगीयार ।

चमामिजय जिनशामने, सफल करो अतार ॥ ६ ॥

॥ सिद्धचक्रजी का चैत्यमन्दन ॥

पहले पद अरिहंतना, गुण गायो नित्ये ।

त्रीजे मिद्र तथा घणा, समगे एक चित्ते ॥ १ ॥

आचारज त्रीजे पदे, प्रणमो निहूँ कर जोडी ।

नमीये श्रीउपभायने, चोथे मद मोडी ॥ २ ॥

पंचम पद मय साधुनु, नमता न आणो लाज ।

ए परमेष्ठी पंचने, ध्याने अविचल राज ॥ ३ ॥

दसण-शकादिक रहित, पद छट्टे वागे ।

मय नाण पद सातमे, क्षण एक न पिसारो ॥ ४ ॥

चारित्र चोरु चित्तयी, पद अष्टम जपीये ।

सफल भेद बीच दान-फल, तप नममे तपीये ॥ ५ ॥

ए सिद्धचक्र आराधता, पूरे वलित कोड ।

सुमतिमिजय करिरायनो, राम रुहे का जोड ॥ ६ ॥

॥ दीमाली का चैत्यमन्दन ॥

सिद्धारथ नृप कुल-तिलो, त्रिशला जम मात ।

हरि लडन तनु सात हाथ, महिमा विख्यात ॥ १ ॥

त्रीश वरस गृहनाम छडी, लिये मयम भार ।

पाग वरस छद्मम्य मान, लही, केवल सार ॥ २ ॥

त्रीश वरस इम मयि मली, चहोतेर थायु प्रमाण ।

दीमाली दिन शिव गया, नय रुहे ते गुण साण ॥ ३ ॥



## ॥ श्री पर्युषण पर्व का स्तवन ॥

सुणजो साजन संत पजुसण आव्यारे, तमे पुन्य करो पुन्यवंतः

भविक मन भाव्यारे, (आंकणी)

वीर जिणोसर अति अलवेसर, वाहाला मारा परमेश्वर एम बोलेरे  
पर्व मांहे पजुसण महोटां, अवर न आवे तस तोलेरे;

पजुसण आव्यां रे, तमे० १

चउपद मांहे जेम कैसरि मोटो, वा० खगमां गरुड कहीए रे;

नदी मांहे जेम गंगा महोटी, नगमां मेरु लहीए रे, प० २

भूपतिमां भरतेसर भाख्यो, वा० देवमांहे सुर इन्द्र रे;

तीरथमां शेत्रुज्जो दाख्यो, ग्रहगणमां जेम चन्द्र रे; प० ३

दशरा दीवाली ने वली होली, वा० अखात्रीज दीवासो रे;

वलेव प्रमुख बहुलां छे बीजां, पण नहीं मुक्तिनो वासोरे प० ४

ते माटे तमे अमर पलावो, वा० अट्टाइ महोत्सव कीजे रे;

अट्टम तप अधिकाइए करीने, नरभव लाहो लीजे रे; प० ५

ढोल ददामा भेरी नफेरी, वा० कल्पसूत्र ने जगावो रे;

भांभरनां भमकार करीने, गोरीनी टोली मली आवोरे; प० ६

सोना रूपाने फूलडे वधावो, वा० कल्पसूत्रने पूजो रे;

नव वखाण विधिण सांभलतां, पाप मेंवासी ध्रुजे रे; प० ७

एम अट्टाईनो महोत्सव करतां वा० बहु जीव जग उद्धरियारे;

विवुध विमलवर सेवक एहथी, नवनिधि ऋद्धि सिद्धि

वरियारे; प० ८

## ॥ श्री दूज तिथिका स्तवन ॥

जीरे मारे प्रणमी शारद माय, शासन वीर सुहंकरु जी;  
 जीरे मारे वीज तिथि गुणमेह, आदरो भविष्य सुन्दर जी  
 ॥१॥ जीरे मारे एह दिन पंच कृष्ण, विपरीने रुहुं ते  
 सुणोजी । जी० मा० महा शुदि वीजे जाण, जन्म अभिनंदन  
 तणो जी ॥२॥ जी० श्रावण शुदिनी हो वीज, सुमति  
 घव्या सुरलोकी जी । जी० तारण भद्रोदधि तेह, तम पद  
 सेवे सुर योकी जी ॥३॥ जी० ममेतशिसर शुभ ठाम,  
 दसमा शीतल जिन गणुं जी । जी० चैत्र वदिनी हो वीज,  
 वर्या मुक्ति तस सुख घणुं जी ॥४॥ जी० फाल्गुन मासनी  
 वीज, उत्तम उज्वल मामनी जी । जी० अरनाथ तस च्यवन,  
 कर्मक्षये भव पासनीजी ॥५॥ जी० उत्तम मास ज मास, शुदि  
 वीजे वासुपूज्यनी जी । जी० एहीज दिन केवलनाण, शरण  
 करो जिनराजनो जी ॥६॥ जी० करणीरूप करो खेत,  
 समकृतिरूप रोपो तीहाजी । जी० सातर किरिया हो जाण,  
 खेड समता करी जिहानी ॥७॥ जी० उपशम तद्रूप नीर,  
 समकित छंड प्रगट होवे जी । जी० संतोष करी अहो  
 घाड, पचम्पाण त्र चोकी सोहे जी ॥८॥ जी० नासे कर्म  
 रिपु चोर, समकित वृत्त फल्यो तिहा जी । जी० मांजर  
 अनुभव रूप, उतरे चारित्र फल जिहा जी ॥९॥ जी० गात  
 सुधारम नीर, पान करी सुख लीजिये जी । जी० तमोल

सम लगो स्वाद, जीवने संतोष रस कीजिये जी ॥१०॥  
 जी० धीज करो दोय मास, उत्कृष्टी बावीश मासनी जी ।  
 जी० चोविहार उपवास, पालिये शील वसुधासनी जी ॥११॥  
 जी० आवश्यक दोय वार पडिलेहण दोय लीजिये जी ।  
 जी० देववंदन त्रण काल, मन वच कायाए कीजिये जी  
 ॥१२॥ जी० उजमणुं शुभ चित्त, करी धरिये संयोगथी  
 जी । जी० जिनवाणी रस एम, पीजिये श्रुत उपयोगथी  
 जी ॥१३॥ जी० इण विधि करिये हो वीज, राग ने द्वेष  
 दूरे करी जी । जी० केवलपद लही तास, वरे मुक्ति उलठ  
 धरी जी ॥१४॥ जी० जिनपूजा गुरुभक्ति, विनय करी सेवो  
 सदा जी । जी० पद्मविजयनो शिष्य, भक्ति पामे सुख संपदा  
 जी ॥१५॥

### ॥ ज्ञानपंचमी का स्तवन ॥

सुत सिद्धारथ भूपनो रे, सिद्धारथ भगवान । वारह परखदा  
 आगले रे, भाखे श्री वर्धमानो रे; भवियण चित्त धरो, मन  
 वच काय अमायो रे; ज्ञान भक्ति करो ॥ ए आंकणी॥१॥  
 गुण अनन्त आतम तणा रे, मुख्यपणे तिहां दोय । तेहमां  
 पण ज्ञानज वडुं रे, जिणथी दरसण होय रे; म०॥२॥ज्ञाने  
 चारिश्च गुण वधे रे, ज्ञाने उद्योत सहाय । ज्ञाने धिविरपणुं  
 लहे रे, आचारज उवभाय रे; म०॥३॥ ज्ञानी श्वासोश्वासमां  
 रे, कठिन करम करे नाश । वहि जेम इन्धन दहे रे,

क्षणमां च्योति प्रकाशो रे, भ० ॥४॥ प्रथम ज्ञान पछी दया  
 रे, संवर मोह पिनाश । गुण ठायेंग पंग थालीये रे, जेम चढे  
 मोक्ष आवासो रे, भ० ॥५॥ मड सुथ ओहि मणपञ्जवा रे  
 पंचम फेजलज्ञान । चउ मुंगा श्रुत एक छे रे, स्व पर,  
 अंकाश निदानो रे; भ० ॥६॥ तेहना साधन जे कर्त्ता रे,  
 पाटी पुस्तक अंगदि । लखे लखावे साचवे रे, धर्मी धरी  
 अप्रमादो रे; भ० ॥७॥ त्रिनिध आणातना जे करे रे,  
 भणता करे अंतराय । अंधा नहेरा बोमडा रे, मुंगा पागला  
 थाय रे, भ० ॥८॥ भणता गुणता न आवडे रे, न मले  
 चल्लम चीज । गुणमंजरी बरदत्त परे रे, ज्ञान विराधन  
 चीज रे, भ० ॥९॥ प्रेमे पूछे परखदा रे, प्रणमी जग-  
 गुरु पाय । गुणमंजरी बरदत्तनो रे, कट्टे अधिकार  
 पसायो रे, भ० ॥१०॥

॥ अष्टमी का स्तवन ॥

हारे मारे टाम धरमना साडा पचवीश देश जो, दीपे रे त्या  
 देश मगध सहुमा शिरे रे लोल । हा रे मारे नगरी  
 तेहमां राजगृही सुविशेष जो, राजे रे त्या श्रेणिक गाजे  
 गज परे रे लोल ॥१॥ हां रे मारे गाम नगर पुर पावन  
 करता नाथ जो, विचरता त्या आवी वीर समोसर्पा रे लोल  
 हा रे मारे चउद सहम मुनिरनो साथे साथ जो, सूवा रे  
 वप संयम शियले अलकर्या रे लोल ॥२॥ हा रे मारे

फूल्या रसभर भूल्या अंब कदंब जो, जाणुं रे गुणशील  
 वन हसी रोमांचियो रे लोल । हां रे मारे वाया वाय  
 सुवाय तीहां अचिलंब जो, वासे रे परिमल चिहुं पासे  
 संचियो रे लोल ॥३॥ हां रे मारे देव चतुर्विध आवे कौडा  
 कोड जो, त्रिगडुं रे मणि हेम रजतनुं ते रचे रे लोल ।  
 हां रे मारे चोसठ सुरपति सेवे होडाहोड जो, आगे रे रस  
 लागे इंद्राणी नचे रे लोल ॥ ४ ॥ हाँ रे मारे मणिमय  
 हेम सिंहासन वेठा आप जो, ढाले रे सुर चामर मणिरत्ने  
 जड्याँ रे लोल । हाँ रे मारे सुणताँ दुंदुभि नाद टले सत्री  
 ताप जो, वरसे रे सुर फूल सरस जानु अड्याँ रे लोल ॥५॥  
 हाँ रे मारे ताजे तेजे गाजे घन जेम लुंब जो, राजे रे  
 जिनराज समाजे धर्मने रे लोल । हां रे मारे निरखी हरखी  
 आवे जन मन लुंब जो, पोषे रे रस न पडे धोखे धर्मने  
 रे लोल ॥ ६ ॥ हां रे मारे आगम जाणी जिननो श्रेणिक  
 राय जो, आव्यो रे परिवरियो हय गय रथ पायगे रे लोल ।  
 हां रे मारे देह प्रदक्षिणा बंदी वेठो ठाय जो, सुणवा रे  
 जिनवाणी मोटे भागीये रे लोल ॥ ७ ॥ हां रे मारे त्रिभुवन  
 नायक लायक तव भगवंत जो, आणी रे जन करुणा  
 धर्मकथा कहे रे लोल । हां रे मारे सहज विरोध विसारी  
 जगना जंतु जो, सुणवा रे जिनवाणी मनमां गहगहे  
 रे लोल ॥ ८ ॥

## ॥ एकादशी का स्तवन ॥

समसंख्येण वेद्य भगवंत, घर्म प्रकाशे श्रीअरिहंत ।  
चार परपदा चेठी रुडी, मागसिर शुदी अगीआरस वडी  
॥ १ ॥ मल्लिनाथना तीन कल्याण, जन्म दीक्षाने केवलनाण ।  
अरजिन दीक्षा लीधी रुडी, मागसिर शुदी अगीआरस वडी  
॥ २ ॥ नमिने उपज्युं केवलज्ञान, पांच कल्याणक अति-  
प्रधान । ए तिथिनी महिमा वडी, माग० ॥ ३ ॥ पांच  
भरत ऐरावत इमही ज, पांच कल्याणक हुए तिमही ज ।  
पचासनी सख्या पंगडी, माग० ॥ ४ ॥ अतीत अनागत  
गण ॥ एम, दोढमो कल्याणक धाय तेम । कुण तिथि छे  
ए तिथि जे इडी, माग० ॥ ५ ॥ अनंत चौपीशी इण परे  
गणो, लाभ अनंत उपमास तणी । ए तिथि सदु शिर ए  
खडी, माग० ॥ ६ ॥ मौनपणे रखा श्रीमल्लिनाथ, एक  
दिवस संयम व्रत माथ । मौन तणी परे व्रत इम वडी,  
माग० ॥ ७ ॥ आठ पहोरी पोसह लीजिए, चौविशार  
विधिषुं कीजिये । पण प्रमाद न कीजे घडी, माग० ॥ ८ ॥  
चर्प इग्यार कीजे उपमास, जात्र जीव पण अधिक उल्लाम ।  
ए तिथि मोक्ष तणी पावडी, माग० ॥ ९ ॥ ऊजमणुं कीजे  
श्रीकार, ज्ञानोपकरण इग्यार इग्यार । करे काउस्सग्ग गुरु-  
षाये पडी, माग० ॥ १० ॥ देहरे स्नात्र कीजिये घली,  
शोशी पूजिये मन रली । मुक्तिपुरी कीजे दुंकडी, माग०

॥ ११ ॥ मौन अग्यारस मोडुं पर्व, आगध्यां सुख लहीये  
 सर्व । व्रत पञ्चस्वाण करो आखडी, माग० ॥ १२ ॥  
 जेसल सोल इक्यासी समे, कीधुं स्तवन सह मन गमे ।  
 समयसुन्दर कहे दहाडी, माग० ॥ १३ ॥

॥ श्री वीश स्थानक स्तवन ॥

हांरे मारे प्रणमुं सरस्वती मागुं वचन विलासजो,  
 वीशरे तप स्थानक महिमा गाईशूरे लोल ॥ हांरे मारे  
 प्रथम अरिहंत पद लोगस्स चौवीसजो, वीजेरे सिद्ध स्था-  
 नक पन्नर भावशुंरे लोल ॥ १ ॥ हां० वीजे पवयणमुं  
 गणशो लोगस्स सातजो, चउथेरे अ.यरियाणं छत्रीसनो  
 सहीरे लोल ॥ हां० ॥ थेराणं पद पंचमे दस उदारजो, छट्टेरे  
 उवज्झायाणं पचवीसनो सहीरे लोल ॥ २ ॥ हां० सातमे  
 नमोलोए सब्बसाहु सत्तावीसजो, आठमे नमो नाणस्स पंचे  
 भावशुंरे लोल ॥ हां० नवमे दरिसणं सडसठ मनने उदारजो,  
 दशमे नमो विणयस्स दस वखाणीएरे ॥ ३ ॥ हां० अगी-  
 आरमे नमो चारित्तस्स लोगस्स सत्तरजो, वारमे नमो  
 वंभस्स नवगुणे सहीरे लो० ॥ हां० ॥ कीरियाणं पदतेरमे  
 वली पचवीसजो, चउदमे नमो तवस्स वार गुखे सहीरे  
 लो० ॥ ४ ॥ हां० पंदरमें नमो गोयमस्स अठ्ठावीसजो नमो  
 जिणाय चउवीस गणशुं सोलमेरे लो० ॥ सत्तरमे नमो  
 चारित्त लोगस्स सित्तेर जो, नाणस्सनो पद गणशुं एकावन

अठारमेरे लो० ॥ ५ ॥ हां० श्रोगणीसमे नमो सुअस्स वीम  
 पीस्नालीसजो, वीसमे नमो तित्थस्स वीम भावसुरे लो० ॥  
 हां० तपनो महिमा चारमें उपर वीमजो, पटमासे एक ओली  
 पूरी कीजिएरे लो० ॥ ६ ॥ हां० तप करता वली गणीये  
 दोयहजार जो, नमकारगाली वीसे स्थानरु भावसुरे लो० ॥  
 हां० प्रभाजना संघ स्वामी वच्छल सारजो, उजमणां विधि  
 कीजिए विनय लीजिएरे लो० ॥ ७ ॥ तपनो महिमां कहो  
 श्री वीर जिनरायजो, विस्तारे डम संबंध गोयम स्वामिनेरे  
 लो० ॥ हां० तप करता वली तीर्थंकर पद होयजो, देवगुरुडम  
 कानि स्वप्न सोडामणोरे लो० ॥ ८ ॥

॥ श्री सिद्धचक्र स्तवन ॥

श्री श्री पालकुमार श्वेतवर्ण अरिहंत आराधे, वीतराग  
 आतम गुण साधे, अमृतदश मल जार ॥ श्री १ ॥ सिद्ध बुद्ध  
 परमात्मा ध्याये, रत्नवर्ण आलभन पाये, सिद्ध आठ गणधार  
 ॥ श्री २ ॥ द्युत्तीस गुण आचारज सोहे, पीत वर्ण ध्याये  
 मन मोहे, स्वपर तारणहार ॥ श्री ३ ॥ पदे पढ़ाये योग्य  
 बनावे, नील वरण आतम गुण गाये पाठरु पद अणधार  
 ॥ श्री ४ ॥ पचम पद को भांग से भजीए, श्याम वरण  
 सब पाप को तजीए, धन साधु अणगार ॥ श्री ५ ॥ दर्शन  
 ज्ञान चरण तप चारे, श्वेतवर्ण साधन अवधारे निश्चय  
 और ध्यवहार ॥ श्री ६ ॥ सिद्धचक्र गुण गाये भाये, आतम  
 लक्ष्मी हर्ष मनावे, गल्लम जय जयकार ॥ श्री ७ ॥



॥ दीवाली स्तवन ॥

जयो जगस्वामी वीरजिनंद ॥ टेर ॥ नगर अपापा  
में प्रभु आये, भविजन को उपकार करंद ॥ ज० १ ॥ निज  
निरवान समय को जानी, सोलां पहर प्रभु वर्म कहंद  
॥ ज० २ ॥ कार्तिक वदि पंदरसको राते, प्रातः कल प्रभु  
मुक्ति लहंद ॥ ज० ३ ॥ परमात्मा पद छिनक में लीनो,  
आठ कर्म को दूर हरंद ॥ ज० ४ ॥ कल्याणरू निर्वाण  
मोहत्सव, कारण मिलकर आयें सुरींद ॥ ज० ५ ॥ पापा  
नगरी नाम कहायो, अस्त भयो जिहां ज्ञान दिनंद  
॥ ज० ६ ॥ नव भल्ली नव लेल्ली राजा, शोक अतिशय  
दिल में धरंद ॥ ज० ७ ॥ भाव उद्योत गया अत्र जगसे,  
द्रव्य उद्योत को दीप करंद ॥ ज० ८ ॥ जिस कारण  
दीवाली होइ, ध्यान योगेप्रभु वीर जिनंद ॥ ज० ९ ॥  
कार्तिक सुदि एकम दिन थावे, गौत्म केवल ज्ञान गहंद  
॥ ज० १० ॥ आत्मराम परमपद पावे, बल्लभ चित्तमें हर्ष  
अमंद ॥ ज० ११ ॥

॥ श्री सिद्धाचल जी का स्तवन ॥

जात्रा नवाणुं करीए, विमल गिरि जात्रा नवाणुं  
करीए । पुर्व नवाणुं वार शत्रुंजय गिरि, ऋषभजिखंद  
समोसरीए ॥ वि० ॥ १ ॥ कोटि सहस्र भव पातक त्रुटे,  
शत्रुंजय सामाडग भरीए ॥ वि० ॥ २ ॥ सात छट दोष

अठम तपस्या, ऋगी चटिण गिरिवरीए ॥ त्रि० या० ॥३॥  
 पु डगिरि पट जपिए मन हग्गे, अध्यवमाय शुभ घरीए ॥  
 त्रि० या० ॥४॥ पापी अभव्य न नजरे देगे हिंसक पण  
 उदरी ए ॥ त्रि० या० ॥५॥ भ्रमि मथारे ने नागी तणी  
 नग, न शकी फी हरीए ॥ त्रि० या० ॥६॥ एकल  
 आहारी ने मचित्त परिहरी, गुरु साथे पट चरीए ॥ त्रि०  
 या० ॥७॥ पडिक्कमणा दोष विधिथु ऋगीए, पापपडल  
 परिहरीए ॥ त्रि० या० ॥८॥ कलिकाले ए तीर्थ मोडु,  
 प्रवदण जेम भवदरीए ॥ त्रि० या० ॥९॥ उत्तम ए गिरिवर  
 सेवता पण रुहे भव तरीए ॥ त्रि० या० ॥१०॥

### पयुपण पर्व की स्तुति

मत्तर भेदी जिन पूजा रचीने, स्नात्र महोत्सव कीजे जी ।  
 ढोल दमामा मेगी नफेरी, झुल्लरी नाट मुणीजे जी ॥  
 गीर जिन आगल भावना भावी, मानव भव फल लीजे जी ।  
 पर्व पजुमण, पूरव पुण्ये, आर्यां एम जारणीजे जी ॥१॥  
 मास पाम वली दसम दुवालम, चत्तारि अट्ट कीजे जी ।  
 ऊपर वली दश दोष करीने, जिन चोर्वाण पूजीजे जी ॥  
 उडा कल्पनो छट्ट करीने, वीर वत्साण मुणीजे जी ।  
 पडवेने दिन जन्म महोत्सव, घवल मंगल वरतीजे जी ॥२॥  
 आठ दिवस लगे थमर पलारी, अट्टमनो तप कीजे जी ।  
 नागकेतुनी परे केवल लहीये, जो शुभ भाषे गहीये जी ॥

तैलाधर दिन त्रय कन्यागणक, गणधरवाद, वर्दाजे जी ।  
 पास नेमीमर अंतर तीजे, अपम चन्नि सुर्गाजे जी ॥३॥  
 वारसा सुत्र ने मामाचारी, मंवाच्छरी पडिकामिये जी ।  
 चैत्य प्रवाडी विधिषुं कीजे, सकल जंतु स्वामीजे जी ॥  
 पारणाने दिन स्वामीवत्सल, कीजे अधिक वडाई जी ।  
 मानविजय कहे सकल मनोरथ, पूरे देवी सिद्धार्या जी ॥४॥

### दूज नियि की स्तुति

दिन सकल मनोहर, बीज दिवस सुविशेष । गय राण  
 प्रणमे, चन्द्र तणी जिहां रेख ॥ तिहां चन्द्र विमाने, शाध-  
 ता जिनवर जेह । हुं बीज तणे दिन, प्रणमुं आणी नेह ॥१॥  
 अभिनन्दन चन्दन, शीतल शीतलनाथ । अरनाथ सुमनि  
 जिन, वासुपूल्य शिव साथ ॥ इत्यादिक जिनवर, जन्म  
 ज्ञान निर्वाण । हुं बीज तणे दिन, प्रणमुं ते सुविहाण ॥२॥  
 परकाश्यो बीजे, दुविध धर्म भगवंत । जेम विमल कमल  
 दोय, विपुल नयन विकमत ॥ आगम अति अनुपम, जिहां  
 निश्चय व्यवहार । बीजे सवी कीजे, पातकनो परिहार ॥३॥  
 गजगामिनी कामिनी, कमल सुकोमल चीर । चक्केसरी  
 केसर, सरस सुगंध शरीर ॥ कर जोडी बीजे, हुं प्रणमुं  
 तस पाय । एम लब्धिविजय कहे, पूरो मनोरथ माय ॥४॥

### ॥ पंचमी की स्तुति ॥

श्रावण शुदि दिन पंचमीये, जन्म्या नेमि जिणंद तो ।  
 श्याम वरण तनु शोभतुं ए, मुख शारद को चंद तो ॥

सइस वरस प्रभु आउरु' ए, ब्रह्मचारी भगवंत तो । अष्ट  
 कर्म हेले हणीए, पहोता मुक्ति महंत तो ॥१॥ अष्टापद पर  
 आदि जिन ए, पहोत्या मुक्ति मोभार तो । राम पूज्य  
 चंपापुरी ए, नेमि मुक्ति गिरनार तो ॥ पायापुरी नगरीमा  
 चली ए, श्री वीर तणु' निर्माण तो । मम्मेटगिरार वीश  
 सिद्ध हृथा ए, शिर वहुं तेहनी आण तो ॥२॥ नेमिनाथ  
 जानी हृथा ए, भाखे सार वचनतो । जीव दया गुण बेलडी  
 ए, कीजे ताम जतन तो ॥ शृपा नरोलो मानरी ए, चोरी  
 चित्त निवार तो । अनत तीर्थकर इम भणे ए, परिहरीये  
 परनार तो ॥३॥ गोमेध नामे यज्ञ भलो ए, देवी श्री अमिका  
 नाम तो । शामन मानिष्य जे करे ए, करे मली धर्मना  
 काम तो ॥ तपगन्ध नायक गुणनीलो ए, श्री विजय सेन  
 सरिसाय तो । अष्टमदास पाय सेवता ए, मफल करो  
 अयतार तो ॥४॥

### अष्टमी की म्नुति

मंगल आठ रूगी जम आगल, भाव धरी सुगरान जी,  
 आठ जातिना मलया भरिने, नगरावे जिनराज जी ।  
 वीर जिनेश्वर जन्म मटोत्मय रगता गिर सुख साधेजी,  
 आठमनो तप करता अम घर, मंगल कमला रावे जी ॥१॥  
 अष्ट कर्म वयसि गज गजन, अष्टापद परे मलिषा जी,  
 आठमे आठ मुष्प विचारी, भद आठे तम गलिया जी,  
 अष्टमी गति जे पहोना जिनार, परम आठ नहीं अग जी,

## ॥ श्री वीश स्थानक पद की स्तुति ॥

पूछे गौतम वीर जिणंदा, समवसरण वेठा सुखकंदा, पूजित  
 अमर सरिंदा । केम निकाचे पद जिनचंदा, क्खिणविध तप  
 करतां भव फंदा, टले दुरितह दंदा ॥ तव भाखे प्रभुजी गन  
 निंदा, सुण गौतम वसुभूति नंदा, निर्मल तप अरविंदा ।  
 वीश स्थानक तप कर महंदा जिम तारक समुदाये चंदा, तिम  
 ए तप सवि इंदा ॥१॥ प्रथम पदे अरिहंत भणीजे, वीजे  
 सिद्ध पवयण पद त्रीजे, आचारज थेर ठवीजे । उपाध्याय ने  
 साधु ग्रहीजे नाणदंरण पद विनय वहीजे, अगियारमे चारित्र  
 लहीजे ॥ वंभवयधारिणं गणीजे, क्खिरियाणं तवस्स करीजे,  
 गोयम जिणाणं लहीजे । चारित्र नाण श्रुत तित्थस्स कीजे  
 त्रीजे भव तप करत सुणीजे, ए सवि जिन तप लीजे ॥२॥  
 आदि 'नमो' पद सवले ठवीश, वार पन्नर वल्ली वार छत्रीश,  
 दश पणवीश सगवीश, । पांच ने सडसठ तेर गणीश,  
 सित्तेर नव क्खिरिया पचवीश, वार अट्ठावीश चौवीस ॥  
 सतरा एकावन पीस्तालीश पांच लोगस्स काउस्सग्ग  
 रहीश, नवकारवाली वीश । एक एक पदे उपवास ज वीश,  
 मास छए एक ओली करीश, एम सिद्धांत जगीश ॥३॥  
 शंक्ते एकासणुं तिविहार, छट्ठ अट्ठम मासखमण उदार,  
 पडिक्कमणुं दोय वार । इत्यादिक विधि गुरुगम धार, एक  
 पद आराधन भव पार, उजमणुं विविध प्रकार ॥ मातंग

यत्न करे मनोहार, देवी सिद्धाह शामन रखपाल, विज  
मिष्टारण हार । सीमाविजय जन उपर प्यार, शुभ भवियण  
धर्मो आधार, श्रीरविजय जयकार ॥४॥

### दीयाली श्री स्तुति

मनोहर मूर्ति महार्गीर तर्णी, जिणे सोल पदोर देशना  
पमणी । नर मल्ली नर लन्धी नृपति सुणी, रुढी शिव  
पाम्या विभूजन धणी ॥१॥ शिव पदोता अष्टम चउदश  
भक्ते, शरीज लद्या शिव मान थिते । छट्टे शिव पाम्या वीर  
रली, रूर्विक उठी अमापम्या निर्मली ॥२॥ आगामी भारी  
भाय कथा, दीयाली रून्पे जेह लद्या । पुण्य पाप फल  
अन्वयणे रया, मरी तदति कर्तने मद्या ॥३॥ मरी  
श्रम मिला उद्योत करे, परमाते गौम ज्ञान रणे । ध्यानमिल  
मदगुण विम्बरे, जिन्शामनमा जयकार करे ॥४॥

### श्री उपदान स्तोत्र स्तुति ।

बीर जिनेश्वर उपदिने ण, मायने भविर मुजारा तो ।  
उपदान जिना नवि करतो ण, मणमे श्री नरकार तो ।  
नीलाम्ब शुभ पौगरी ण, र्श्रीष्ट जुद्ध उपदान तो  
स्त्रीपानी आनोपग ण, लईये मुगुरु पारतो ॥१॥  
पद्म मणलतुं बागीये ण, ए पदेतु उपदान तो ।  
श्रीश्रमतुं बागीये ण, ए पौनु उपदान तो ।

चैत्येऽस्तवन्तुं मानीये ए, ए चोद्धुं उपधान तोः  
नवी तीर्थकर इम भणे ए, उपधान करो बहुमान तो ॥२॥  
श्रुतस्तवरे सिद्धस्तवरे ए, छट्टुं वहो उपधान तोः  
शक्रस्तवधनुं जार्णये ए, धरीये तृतीय ध्यान तो ।  
नाम स्तव लोमस्तव ए, पांचमं शुभ उपधान तोः  
श्री महानेशाय सूक्तमा ए, नौख्युं श्री जिनराज तो ॥३॥  
महा महोत्सव आर्वीये ए, श्री गुरुवरनी पास तोः  
नांद नडाथो डाठसुं ए, पधरावो जिनराज तो ।  
श्रीफल द्रव्य चडावीये ए, मणिक्यादि मार तो,  
सम्यग् दष्टि मुक्ति सभो ए, देवी सिद्धायी सहाय तो ॥४॥

चैत्री पूनम की स्तुति ॥६॥

पुंडरीकपंडण पाय प्रणमी जे, आदीश्वर चिन चंदाजी ॥  
नेमि विना त्रेवीश तीर्थकर, गिरि चढिया आणदा जी ॥  
आगममाहे पुंडरीक महिमा, भाख्यो ज्ञान दिणंदाजी ॥  
चैत्री पूनम दिन देवी चक्रेसरी, सौभाग्य द्यो सुखकंदाजी ॥१॥

१ अरिहंत चेड्याणं० अन्नत्य । २ पुण्ड्रवर । ३ सिद्धाणां-  
बुद्धाणं । ४ नमुत्थुणं ।

॥ यह स्तुति ( थुई ) चार वखत भी कह सकते हैं ।

